तापमान

अधिकतम 22.0 डिग्री
न्यूनतम 5.0 डिग्री

हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि

रोहतक, रविवार 1 फरवरी 2026

12 लॉन्ग जंप में नीतू को मिला बेस्ट एथलीट अवार्ड

12 युवा देश का भविष्य, पढ़ाई व खेलों में ध्यान लगाकर नशे जैसी बुरी आदतों से रहें दूर: रामपाल

खबर संक्षेप

सरपंच प्रतिनिधि पर हमले का आरोपी काबू

कुंड। थाना खोल पुलिस ने भालखी की सरपंच के देवर सुरेंद्र उर्फ धोलिया के घर पर हमला करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। गत 19 जनवरी की शाम को रविंद्र हाथी पर कई लोगों ने हमला कर दिया था। उसे एक प्राइवेट अस्पताल में दाखिल कराया गया था। पुलिस ने रविंद्र हाथी के बयान पर कई लोगों के खिलाफ केस दर्ज करते हुए कुछ आरोपियों को तुरंत गिरफ्तार कर लिया था। उसी रात सुरेंद्र उर्फ धोलिया के घर पर भी हमला हुआ था। क्रॉस में राजस्थान के परतापुर निवासी पंकज को गिरफ्तार किया गया है। उसे शनिवार को कोर्ट में पेश कर दिया गया। हाथी पर हमले के बाद दूसरे गुट के सुरेंद्र उर्फ धोलिया पर भी जानलेवा हमला हो गया था।

चोरी के मामले में एक और आरोपी गिरफ्तार

बावल। कसोला थाना पुलिस ने वर्ष 2024 में चोरी के आरोप में दर्ज मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने थाना क्षेत्र में हुई चोरी की वारदात के बाद 3 मई 2024 को केस दर्ज किया था। पुलिस ने आसपास के सीसीटीवी कैमरों की की मदद से आरोपियों का पता लगाने के प्रयास शुरू किए थे। एक आरोपी को पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया था। अब इस मामले में नूंह जिले के गुवारका निवासी आजाद को प्रोडक्शन वारंट पर लेकर गिरफ्तार किया गया है। आरोपी के खिलाफ चोरी के कई मामले दर्ज हैं। पुलिस ने कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया।

दहेज उत्पीड़न के मामले में एक गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने दहेज उत्पीड़न व जान से मारने की धमकी देने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। वर्ष 2025 में विवाहिता की शिकायत के आधार पर पुलिस ने दोनों पक्षों के बीच काउंसलिंग के जरिए समझौता कराने के प्रयास किए थे। कई बार पुलिस थाने में दोनों पक्षों के बीच बातचीत हुई, लेकिन उनमें सुलहनामा नहीं हुआ। इसके बाद पुलिस ने गत वर्ष 25 अक्टूबर को आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने राजस्थान के पड़सावन निवासी कमल कुमार को गिरफ्तार कर लिया। उएसे तफ्तीश में शामिल करने के बाद पुलिस बेल पर छोड़ दिया गया।

घर में घुसकर हमला करने के आरोपी काबू

रेवाड़ी। बावल थाना पुलिस ने हरचंदपुर गांव में घर में घुसकर हमला करने के मामले में पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पीड़ित पक्ष के बयान पर गत 20 जनवरी को कई आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया था। पीड़ित ने घर में घुसकर हमला करने और धमकी देने के आरोप लगाए थे। इस मामले में पुलिस ने हरचंदपुर निवासी मांगेराम, विकास, कालड़ावास निवासी सागर, मोहम्मदपुर निवासी सुभाष और सोझूवास निवासी अनूप को गिरफ्तार कर लिया। तफ्तीश में शामिल करने के बाद आरोपियों को पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

आर्म्स एक्ट के मामले में एक गिरफ्तार

रेवाड़ी। थाना रामपुरा पुलिस ने आर्म्स एक्ट के तहत दर्ज मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। उसके कब्जे से एक देशी पिस्टल बरामद की गई है। पुलिस को सूचना मिली थी कि कुतुबपुर निवासी चंद्रप्रकाश अवैध हथियार रखता है। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने चंद्रप्रकाश को मौके पर जाकर काबू कर लिया। तलाशी लेने पर उसके कब्जे से एक देशी पिस्टल बरामद हुआ। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार करने के बाद उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत केस दर्ज कर लिया। आरोपी को कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया गया।

---

100 से अधिक सीनियर सैकेंडरी और 50 हाई स्कूलों में से आधों में नहीं सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीनों की सुविधा

स्कूलों में बेटियों को कैसे मिलेगी स्वास्थ्य सुरक्षा सैनेटरी पैड मशीनें होने के बाद भी इस्तेमाल में नहीं

शिक्षण संस्थाओं में लगी सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीनों का कुछ जगह इस्तेमाल हो रहा है, जबकि कुछ जगह इस्तेमाल नहीं होने की वजह से ये जंग खा गई है। बस अड्डा परिसर में लगी मशीनों का इन दिनों इस्तेमाल नहीं हो रहा। महिला एवं विभाग के दो आंगनबाड़ी केंद्रों में ऐसी मशीनें लगी है, जोकि इस्तेमाल की अवस्था में है।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

सरकार की ओर से सरकारी कार्यालयों, बस स्टैंड और शिक्षण संस्थाओं में सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीनें लगवाई गई थी। कुछ स्कूलों में सीएसआर के माध्यम से भी वेंडिंग मशीनें लगी थी। मगर कई जगह देखरेख और इस्तेमाल नहीं होने की वजह से ये मशीनें जंग खा रही हैं। नगर परिषद व बस स्टैंड पर लगी वेंडिंग मशीन पर संबंधित विभाग का कोई ध्यान नहीं है। जिले में 100 से अधिक सीनियर सैकेंडरी और 50 हाई स्कूल है, जिनमें किशोरियों को वेंडिंग मशीनों की जरूरत है। सूत्रों के अनुसार करीब 80 स्कूलों में ही सैनेटरी पैड मशीनें काम कर रही है। हांलाकि शिक्षा विभाग की ओर से किशोरियों को प्रति माह पैड वितरित किए जा रहे है। पीएमश्री राजकीय कन्या विद्यालय रेवाड़ी में सीएसआर के तहत लगी सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीन काफी समय से यूज नहीं हो रही है। शिक्षण संस्थाओं के मुखियाओं ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का निर्देश किशोरियों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए सराहनीय कदम है। जिले में स्कूल जाने वाली कक्षा 6 से 12 तक की बालिकाओं को सुप्रीम कोर्ट के इस निर्देश से सीधा लाभ मिलने वाला है। हालांकि प्रदेश सरकार की ओर से पहले भी कुछ कदम उठाकर इस विषय पर गंभीरता से काम किया जा रहा है। सरकार की ओर से कुछ शिक्षण संस्थाओं, आंगनबाड़ी केंद्रों, बस अड्डा परिसर, नगर परिषद परिसर और सरकारी कार्यालयों में सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन लगवाई गई थी, इनमें से कुछ का इस्तेमाल भी नियमित रूप से हो रहा है, जबकि कुछ जगह देखरेख के अभाव में मशीनें जंग खा रही है। शिक्षा विभाग से मिली जानकारी के मुताबिक जिले एक सौ से अधिक सीनियर और 50 से अधिक उच्च विद्यालय है। इनमें कुछ स्कूलों में प्रधानाचार्यों ने इस मामले में संजीदगी दिखाते हुए औद्योगिक कंपनियों के साथ बात कर सीएसआर के तहत ऐसी मशीनों को स्थापित करा दिया। मिडिल स्कूलों में इन मशीनों का अभाव है। बालिकाओं के व्यक्तिगत स्वास्थ्य से जुड़ा यह मामला बेहद गंभीर है। शिक्षा विभाग के माध्यम से किशोरियों को प्रतिमाह सैनेटरी पैड का निःशुल्क वितरण किया जाता है। सरकार की ओर से ऐसे पैड संबंधित स्कूल की मांग अनुसार भिजवाए जाते है। महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से आंगनबाड़ी केंद्रों के माध्यम से बीपीएल परिवार की किशोरियों और महिलाओं को लगभग प्रतिमाह सैनेटरी पैड फ्री वितरित किए जाते है।

आंगनबाड़ी केंद्रों में प्रति माह बीपीएल परिवारों की महिलाओं व किशोरियों को वितरित किए जा रहे सैनेटरी पैड, वेंडिंग मशीनें दो केंद्रों पर चल रही

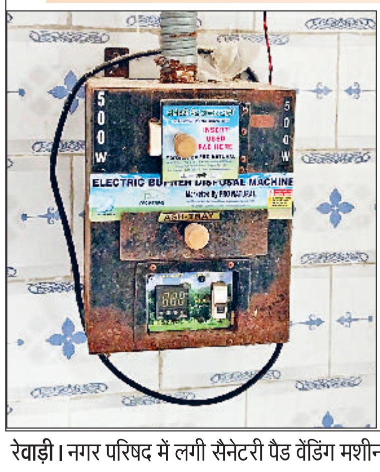

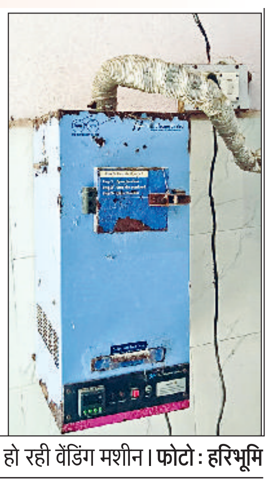

रेवाड़ी। नगर परिषद में लगी सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीन पर लगी जंग, गर्ल्स स्कूल रेवाड़ी में यूज नहीं हो रही वेंडिंग मशीन। फोटो : हरिभूमि

दो आंगनबाड़ी केंद्रों में लगी वेंडिंग मशीन

महिला एवं बाल विकास विभाग की परियोजना अधिकारी शालू यादव ने बताया कि जिले में 1099 आंगनबाड़ी केंद्र है। इन केंद्रों में क्रीड के आंकड़ों के अनुसार बीपीएल परिवार की किशोरियों और महिलाओं को निःशुल्क सैनेटरी पैड वितरित किए जाते है। उन्होंने बताया कि वेंडिंग मशीनें गांव शहबाजपुर खालसा और बावल के एक आंगनबाड़ी केंद्र में लगी हुई है और इस्तेमाल हो रही है। पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पाल्हावास की प्रधानाचार्य शोभारानी भारद्वाज, कंवाली स्कूल के प्राचार्य अनिल यादव व बिठवाना स्कूल के प्राचार्य डा. दुष्यंत ने बताया कि प्रदेश सरकार की ओर से शिक्षा विभाग को सैनेटरी पैड उपलब्ध कराए जाते है, जिनको बालिकाओं में निःशुल्क बांट दिया जाता है।

टास्क के नाम पर 1.25 लाख रुपये की ठगी करने के मामले में दो आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में ठगी के आरोपी। फोटो : हरिभूमि

रेवाड़ी। साइबर थाना पुलिस ने गत वर्ष अप्रैल माह में एक कंपनी कर्मचारी से ऑनलाइन टास्क के नाम पर मोटे मुनाफे का लालच देकर लगभग 1.25 लाख रुपये की ठगी करने के मामले में दो और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान राजस्थान के जयपुर के सुशांत सिटी निवासी प्रशांत व जिला अजमेर के गांव दोराई निवासी सागर सोनी के रूप में रूप में हुई हैं। पुलिस इस मामले में एक आरोपी को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी हैं। गत वर्ष 19 अप्रैल को धारूहेड़ा की एक कंपनी में कार्य करने वाले मूलरूप से यूपी के जिला अलीगढ के गांव गिदौरा निवासी दीपक शर्मा ने अपनी शिकायत में बताया था कि उसे टेलीग्राम पर एक ग्रुप से जोड़ा गया था। मैसेज भेजकर उसे ऑनलाइन टास्क करने पर मोटा पैसा कमाने का लालच दिया गया था। शुरूआत में उसे कम भुगतान से टास्क शुरू करने को कहा। उसने पहले कम पैसा जमा कराए, जिसके बदले अच्छा मुनाफा दिया गया। इसके बाद वह जाल में फंसता चला गया। उससे विभिन्न ट्रांजेक्शन के जरिए 1 लाख 24 हजार 600 रुपये ट्रांसफर करा लिए गए, परंतु वापस कोई पैसा नहीं मिला। पुलिस ने मामले में संलिप्त एक आरोपी राजस्थान के जिला उदयपुर के गांव आसौलिया की मादड़ी निवासी भरत को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। आरोपी भरत के बैंक खाते में ठगी के 49500 रुपये ट्रांसफर हुए थे। पुलिस ने शुक्रवार को मामले में संलिप्त दो और आरोपी प्रशांत व सागर सोनी को भी गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी प्रशांत के बैंक खाते में 13 हजार 500 रुपये गए थे, जबकि आरोपी सागर सोनी ने मध्यस्थ की भूमिका निभाई थी।

■ पुलिस एक आरोपी को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी

डीएलएसए सचिव ने किया वृद्ध आश्रम का निरीक्षण

रेवाड़ी। वृद्धाश्रम में बुजुर्गों से बात करते सीजेएम अमित वर्मा। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी कम सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अमित वर्मा ने शनिवार को वृद्ध आश्रम का औचक निरीक्षण किया। सीजेएम अमित वर्मा ने वृद्धजनों की जरूरी सुविधाओं का जायजा लिया। उन्होंने वृद्धजनों को मिलने वाले भोजन व अन्य जरूरी सुविधाओं की जांच की तथा उनको और बेहतर से बेहतर सुविधाएं देने के निर्देश दिए। सीजेएम अमित वर्मा ने कहा कि वृद्ध व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से तो कमजोर होता ही है तथा उसकी सबसे बड़ी पीड़ा उसका अकेलापन होता है। वृद्धजनों को समाज से अलग-थलग न करें, बल्कि उनको समाज का हिस्सा माने तथा उनको अहसास दिलाए की हम सब उनके साथ है,वे अकेले नहीं हैं। उन्होंने सभी स्टाफ मेंबर को निर्देश दिए ताकि वे बुजुर्गों का अच्छे से ख्याल रखें। इससे वृद्धजनों का अकेलापन भी दूर होगा तथा उनमें एक नई चेतना का संचार होगा। हर व्यक्ति को अपने बुजुर्गों का सत्कार व उनकी संभाल करनी चाहिए, ताकि बुजुर्गों को जिंदगी के आखिरी पड़ाव में परिवार का सहारा मिल सके। उन्होंने बताया कि लीगल एड द्वारा सीनियर सिटीजन, महिलाएं, बच्चों, अनुसूचित जाति व जनजाति के लोगों व तीन लाख से कम वार्षिक आय वाले सभी व्यक्तियों को निःशुल्क में कानूनी सहायता दी जाती है और कोई भी जन कानूनी सहायता के लिए उप मंडल विधिक सेवा समिति या जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के कार्यालय में संपर्क कर सकता है। उन्होंने नालसा हेल्पलाइन 15100 के बारे में भी बताया।

■ जरूरी सुविधाओं का लिया जायजा

युवक का अपहरण कर हत्या करने के मामले में पांच आरोपी और गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

शहर थाना पुलिस ने युवक का अपहरण कर लाठी-डंडों से पीट-पीट कर हत्या करने के मामले में पांच और आरोपियों को अदालत से प्रोडक्शन वारंट पर लेकर गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान जिला रोहतक के गांव भाली आनन्दपुर निवासी विकास उर्फ मोनू, गांव गोकलगढ़ निवासी तरुण उर्फ तन्नु, अनुज उर्फ डाक्टर, नीरज उर्फ अज्जू व हर्ष उर्फ तोतला के रूप में हुई है। पुलिस इस मामले में पांच आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है।

गांव भटेडा निवासी नितेश उर्फ चोटी ने अपनी शिकायत में बताया था कि गत वर्ष 15 अक्टूबर को दोपहर के समय वह अपने साथियों के साथ बाजार से सामान खरीदने के लिए गए थे। बाइक पर उसके साथी अंकित उर्फ चमन, मोहित व यश बैठे हुए थे और स्कूटी पर वह, उसका साथी विजय, प्रवीण व कुलदीप पंडित बैठे हुए थे।

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में हत्या में शामिल आरोपी। फोटो : हरिभूमि

गाली गलौज करने का लगाया आरोप

जब वह बाजार की तरफ जाने के लिए मोहल्ला नई बस्ती के पास पहुंचे तो वहां पर मन्नु सैनी उर्फ यश पहले ही अपनी पल्सर बाइक लेकर खड़ा हुआ था और मन्नु सैनी ने उनके आगे आगे चल रही अंकित उर्फ चमन की बाइक को रुकवा लिया। बाइक को रूकवाते ही मन्नु सैनी ने गाली गलौज करना शुरू कर दिया। जिसको लेकर उनका मन्नु सैनी के साथ झगड़ा हो गया। उसके बाद मन्नु सैनी ने अपने भाई व अन्य साथियों को फोन कर दिया। दोबारा से झगड़ा होने के आशंका को देखते हुए वह अपने साथी प्रवीण उर्फ पीजी व कुलदीप पंडित को उनके गांव गुरावडा तक छोड़ने के लिए चल दिए। जब वह झज्जर चौक के पास पहुंचे तो पीछे से कुछ लड़के बाइक पर आते हुए दिखाई दिए। इसके बाद झज्जर फ्लाईओवर पर चढने के बाद सामने से एक बोलेरो गाड़ी ने उनके आगे चल रही अंकित उर्फ चमन की बाइक को जान से मारने की नियत से टक्कर मार दी। टक्कर लगने से अंकित उर्फ चमन की बाइक वही सड़क पर गिर गई। इसके बाद पीछे-पीछे आ रहे बाइक सवार लड़कों ने उनकी स्कूटी को टक्कर मारी थी। बोलेरो गाड़ी में आए शिवम सैनी व तरुण उर्फ तन्नु ने अपने साथियों के साथ मिलकर अंकित उर्फ चमन को गाड़ी में जबरन डाल लिया और गोकलगढ़ की तरफ लेकर चले गए हैं। इसके पश्चात वह सभी काफी समय तक गोकलगढ व आसपास के एरिया में अंकित उर्फ चमन की तलाश करते रहे।

रोहिंग्या व बांग्लादेशी नागरिकों की पहचान के लिए चला पुलिस का सर्च अभियान

रेवाड़ी। जिला पुलिस ने स्वैत टीम के साथ शनिवार को थाना कोसली व रामपुरा क्षेत्र में अनाधिकृत रूप से रहने वाले रोहिंग्या व बांग्लादेशी नागरिकों का पता लगाने के लिए सर्च अभियान चलाया। इस दौरान पुलिस ने ईट-भट्ठों, झुग्गी ,झोपड़ियों होटल व पोल्ट्री फार्म सहित अन्य संदिग्ध स्थानों पर जांच की। पुलिस टीम ने वहां पर रह रहे बाहरी श्रमिकों की भी जानकारी लेकर उनके पहचान पत्रों व वाहनों के कागजातों की भी जांच की। एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि जिले अनाधिकृत रूप से किसी को भी रहने की छूट नहीं है। जिले में जो भी लोग बाहर से आकर रह रहे हैं, उनकी पहचान होना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने थाना प्रबंधकों को अपने-अपने क्षेत्र में अप्रवासी रोहिंग्या व बांग्लादेशी नागरिकों की पहचान करके उनको वापस भेजने की प्रक्रिया अमल में लाने के निर्देश दिए। एसपी ने जिला वासियों से अपील करते हुए कहा कि वे अपने पास काम करने वाले या किराए पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की पुलिस वेरिफिकेशन जरूर कराएं। अगर भविष्य में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं करता तो उसके खिलाफ भी पुलिस द्वारा कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

रेवाड़ी। पहचान पत्रों की जांच करते हुए पुलिस। फोटो : हरिभूमि

बिजली लिंक लाइन के एसीएसआर कंडक्टर तार चोरी

कोसली। जुड्डी गांव के एमसी से बिसोहा एमसी-2 तक 33 केवी बिजली लिंक लाइन के लगभग 15-16 स्पैन के एसीएसआर कंडक्टर तार चोरी हो गए। बिजली निगम के एसडीओ रोहित ने नाहड़ पुलिस चौकी में दी शिकायत बताया कि दो पम्प हाउस, एमसी एक जुड्डी तथा एमसी दो बिसोहा को विद्युत आपूर्ति दो स्रोतों से प्राप्त होती है। मुख्य 33 केवी सप्लाई 220 केवी सब-स्टेशन लूला अहीर से दोनों पम्प हाउस के इनपुट तक तथा बैकअप 33 केवी सप्लाई 132 केवी सब-स्टेशन से एमसी एक जुड्डी पम्प हाउस के इनपुट तक तथा आगे एमसी-1 से एमसी टू तक 33 केवी लिंक लाइन के माध्यम से एमसी टू बिसोहा पम्प हाउस तक बिजली आपूर्ति होती है। 28 जनवरी को रात्रि लगभग 11 बजे 220 केवी सब-स्टेशन लूला अहीर से आने वाली मुख्य सप्लाई में बाधा उत्पन्न हुई, जिसके कारण बैकअप 33 केवी लाइन को चार्ज/एनर्जाइज कर एमसी जुड्डी पम्प हाउस को चलाया गया। परंतु उस समय एमसी टू बिसोहा पम्प हाउस को चलाया नहीं जा सका। तत्पश्चात कुछ समय बाद 220 केवी सब-स्टेशन लूला अहीर से वोल्टेज/सप्लाई की समस्या का समाधान हो गया। घटना के अगले दिन लिंक लाइन की पेट्रोलिंग जांच की गई, जिसमें यह पाया गया कि जुड्डी गांव के एमसी से बिसोहा एमसी-2 तक 33 केवी लिंक लाइन के लगभग 15-16 स्पैन के एसीएस आर कंडक्टर तार अज्ञात लोग चोरी कर ले गए। घटना से विभाग को वित्तीय हानि के अतिरिक्त विद्युत आपूर्ति व्यवस्था भी प्रभावित हुई। पुलिस ने एसडीओ की शिकायत पर अज्ञात लोगों के विरुद्ध मामला दर्ज कर लिया है।

झाल में दो दुकानों से नकदी व सामान चोरी

कोसली। झाल गांव के एक दुकानदार ने गांव के ही एक व्यक्ति पर दुकान में चोरी करने का आरोप लगाते हुए कोसली थाने में मामला दर्ज कराया है। झाल गांव निवासी उमराव सिंह ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 30 जनवरी की रात को उनकी तथा उनके पडौस की दुकान में चोरी हो गई। उनकी दुकान से चोर लगभग 23700 रुपये की नकदी व लगभग 600 रुपये का सामान तथा पड़ौस के दुकानदार भैरूपुर निवासी योगेश की दुकान से 7400 रुपये नकद व पांच सौ रुपए का सामान चोरी कर ले गए। दुकान के सीसीटीवी कैमरे चैक करने पर कृष्ण निवासी झाल दुकान में घुसता हुआ दिखाई दे रहा है। पुलिस ने उसकी शिकायत पर शनिवार को मामला दर्ज कर जांच शुरू की है।

आसमान में बादलों के बीच हल्की बारिश की संभावना

रात व दिन के तापमान में मामूली वृद्धि

■ आज मौसम में बदलाव की संभावना, कड़ाके की ठंड एक बार फिर कर सकती है परेशान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

कोहरे से निजात मिलते ही दिन व रात के तापमान में मामूली बढ़ौतरी दर्ज की गई। फरवरी माह के पहले सप्ताह में मौसम में बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है। आसमान में बादलों के साथ हल्की बारिश की संभावना है। इसके बाद दिन-रात के तापमान में तेजी से गिरावट आ सकती है, जो कड़ाके की ठंड की वापसी करने का काम करेगी। शनिवार को सुबह के समय कोहरे का असर आंशिक रहा। सूर्योदय के साथ ही मौसम साफ हो गया। इसके बाद दिन भर तेज धूप का असर बना रहा। अधिकतम तापमान 0.5 डिग्री की वृद्धि के साथ 22.0 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। न्यूनतम तापमान भी 0.5 डिग्री की वृद्धि के साथ 5.0 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। लगभग 20 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्ताएं से चलने वाली हवाओं ने ठंड का असर फिर से बढ़ाना शुरू कर दिया।

मौसम विभाग के अनुसार पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता के चलते रविवार को मौसम में बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है। आसमान में बादल छाने के साथ ही कहीं हल्की बारिश, तो कहीं बूंदाबांदी होने की संभावना जताई जा रही है। बारिश के साथ ओलावृष्टि से भी इनकार नहीं किया जा रहा है। बारिश के बाद कड़ाके की ठंड वापसी कर सकती है।

रेवाड़ी। एक खेत में लहलहाती सरसों की फसल। फोटो : हरिभूमि

किसानों को बारिश का इंतजार

रबी की फसलों के सीजन में इस बार दिसंबर और जनवरी माह में अभी तक ठीक से बारिश नहीं हुई है। जनवरी में दो बार बारिश हुई थी। इस समय सरसों और गेहूं की फसलों को सिंचाई की ज्यादा जरूरत है। अगर अच्छी बरसात होती है, तो इससे किसानों को काफी राहत मिलेगी। बारिश से दोनों फसलों को अच्छा फायदा मिलेगा। अगर बारिश के साथ ओलावृष्टि होती है, तो इससे फसलों को नुकसान भी हो सकता है।

SADASUKH MEMORIAL SCHOOL
AFFILIATED TO CBSE NEW DELHI
REQUIREMENT
PGT- Physics, Chemistry, Biology, Maths, Political Science, History, Physical Edu., Hindi, English
TGT- English, Science, Maths, Hindi, Sanskrit, Computer Social Science (Eng. Medium), Art & Craft
PRT- English, EVS, Maths, Mother Teacher, Computer
COACH- Atheletic, Vollyball, Badminton
NON TEACHING STAFF Receptionist, Accountant, Computer Operator Driver, Conductor, Peon, Gardener, Sweeper
Salary No Bar for Deserving Candidates
WALK-IN-INTERVIEW
on Sunday, 01st Feb. 2026 10:00 am to 02:00 pm
VENUE: GAHRA ROAD, KANINA (M/GARH)
Contact for - 9266014001, 9306259822, 9991810146, 9416150682

क्या कृषि नीति में बदलाव के बीज बो पाएगा बजट

उम्मीद है कि एक फरवरी को आने वाला बजट इस बार खेती को सिर्फ कल्याणकारी योजना न मानकर, इसे एक उत्पादक और तकनीकी-सक्षम क्षेत्र के रूप में विकसित करेगा।

बजट 2026 भारत की कृषि नीति में बदलाव के बीज बो सकता है। यह ऐसा क्षेत्र है जो भारत–अमेरिका व्यापार वार्ताओं में एक प्रमुख विवाद बिंदु बनकर उभरा है। खेती के मुद्दे पर ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पलटवार करने का फैसला किया। 7 अगस्त को दिल्ली में ट्रंप द्वारा टैरिफ की घोषणा के एक दिन बाद, उन्होंने कहा कि भारत अपने किसानों, डेयरी क्षेत्र और मछुआरों के कल्याण से कभी समझौता नहीं करेगा। अब सबकी निगाहें इस बात पर हैं कि सीतारमण अपने बही-खाते में भारत के अन्नदाताओं के लिए क्या खोलती हैं। क्या बजट 2026 केवल लेखा-जोखा संतुलित करेगा या घरेलू प्राथमिकताओं और वैश्विक व्यापार दबावों के बीच फंसे इस क्षेत्र के लिए किसी बड़े पुनर्संतुलन का संकेत देगा।

कृषि क्षेत्र
सेंट्रल डेस्क

समय की आवश्यकता

2050 तक भारत की जनसंख्या 1.6 अरब तक पहुंचने का अनुमान है। ऐसे में खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही सतत विकास तथा एसडीजी लक्ष्यों के अनुरूप देश की कृषि निर्यात क्षमता को खोलना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। विशेषज्ञ इस चुनौती से निपटने के लिए 4पी दृष्टिकोण की जरूरत बताते हैं।

प्रोड्यूज (उत्पादन): अनुसंधान एवं विकास में निवेश के जरिए अधिक उत्पादन

प्रोसेस (प्रसंस्करण): मूल्य संवर्धन और अवसंरचना के माध्यम से अधिक उत्पादन मूल्य

प्राइस (कीमत): कुशल आपूर्ति श्रृंखला और बेहतर मूल्य प्राप्ति के जरिए अधिकतम मूल्य

प्रोटेक्ट (संरक्षण): दीर्घकालिक स्थिरता के लिए संसाधनों की लचीली और टिकाऊ सुरक्षा

प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाएं

2026 में भारत वैश्विक मंच पर दो प्रमुख उपलब्धियों के साथ प्रमुख भूमिका में होगा। संयुक्त राष्ट्र ने 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला किसान वर्ष घोषित किया है, जो कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका और कृषि व ग्रामीण आजीविका में लैंगिक अंतर को पाटने की तत्काल आवश्यकता को मान्यता देता है। भारत अपनी अध्यक्षता में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा, जो अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने का अवसर देगा। आगामी केंद्रीय बजट महिला-नेतृत्व वाली कृषि पहलों के लिए संसाधन आवंटित कर व वैश्विक कृषि-खाद्य निर्यात में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने वाले कार्यक्रमों को सशक्त बनाएगा।

अधिक धन की संभावना

पिछले केंद्रीय बजट में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के लिए आवंटन वित्त वर्ष 2025 में 1.52 लाख करोड़ और वित्त वर्ष 2026 में 1.37 लाख करोड़ रुपये निर्धारित किया गया था, जबकि एमएसपी और इनपुट सब्सिडी सहित क्षेत्र पर वास्तविक प्रभावी व्यय 3.91 लाख करोड़ से अधिक रहा। अनुमान है कि इस क्षेत्र के लिए आवंटन में उत्तर की ओर बढ़त हो सकती है। अधिक आवंटन उभरते क्षेत्रों को प्रोत्साहन देगा और निर्यात लक्ष्यों, आत्मनिर्भरता, अनुसंधान एवं विकास तथा तकनीक-आधारित खेती को समर्थन प्रदान करेगा। यह बजट ऐसे समय में आ रहा है जब कृषि क्षेत्र सुस्ती के दौर से गुजर रहा है।

परिवहन में सड़ते अरबों रुपये

मजबूत अनाज उत्पादन के बावजूद भारत में भंडारण और लॉजिस्टिक्स की कमी के कारण फल और सब्जियों जैसी वस्तुओं का 15% से 20% तक नुकसान हो जाता है। पीडीएस भी रिसाव, अवसंरचना की कमी और बर्बादी जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है। यह कृषि उत्पादकता के लिए बड़ी बाधाएं हैं। आगामी बजट में फसल कटाई के बाद प्रबंधन हेतु कोल्ड चेन, आधुनिक गोदाम, प्रसंस्करण इकाइयां और डिजिटल आपूर्ति-श्रृंखला प्रबंधन जैसी कृषि अवसंरचना में निवेश तेज किया जाना चाहिए। मूल्य स्थिरीकरण कोष (पीएसएफ) का विस्तार होना चाहिए। इसका उपयोग पहले से प्याज और दाल की कीमतों को स्थिर करने के लिए किया जा रहा है। अन्य सस्ती आवश्यक वस्तुओं जैसे दाल, आटा और चावल की उपलब्धता नेटवर्क को मजबूत करना, निम्न-आय वर्ग के लिए वहनीयता बनाए रखने में मदद करेगा।

खाद्य सुरक्षा के लिए कदम

सरकार के राष्ट्रीय खाद्य तेल–तिलहन मिशन और आत्मनिर्भर दाल मिशन, आत्मनिर्भरता की स्पष्ट दिशा दर्शाते हैं। इसमें तिलहन के लिए 2030–31 तक 10,103 करोड़ रुपये का प्रावधान है। उत्पादन को 39 मिलियन टन से बढ़ाकर लगभग 70 मिलियन टन करने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें 40 लाख हेक्टेयर धान-परती भूमि को तिलहन के तहत लाने की योजना शामिल है। इसी प्रकार 1,000 करोड़ के समर्थन वाले दाल मिशन का लक्ष्य 2027 तक चयनित दालों में आत्मनिर्भरता हासिल करना है, जिसके तहत 126 लाख क्विंटल प्रमाणित बीजों का वितरण और 88 लाख मुफ्त बीज किट उपलब्ध कराई जाएंगी। बजट में इन प्रयासों को और मजबूत करना चाहिए, खासकर इसलिए क्योंकि भारत अभी भी अपनी खाद्य तेल आवश्यकता का लगभग 60% आयात करता है और दालों का भी बड़ा हिस्सा बाहर से लाता है। खाद्य और पोषण सुरक्षा की शुरुआत खेतों से होती है। भारतीय कृषि में पैमाना भी है और स्थायित्व भी। बजट 2026 यह तय करेगा कि सरकार पुरानी लकीरों पर ही हल चलाती रहेगी या इस क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर बड़ी फसल काटने में मदद करेगी।

कीटनाशक देश को खाद्य सुरक्षा देने में भी अहम फसल सुरक्षा के लिए स्पष्ट नियमों की दरकार

खाद्य सुरक्षा
सेंट्रल डेस्क

भारतीय कृषि एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है। एक ओर देश आत्मविश्वास के साथ स्वयं को वैश्विक खाद्य महाशक्ति, दुनिया के लिए एक विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता और कृषि विनिर्माण के केंद्र के रूप में स्थापित करने की बात करता है। दूसरी ओर फसल सुरक्षा, किसानों की स्थिरता और खाद्य मूल्य संतुलन की रीढ़ से जुड़ा नीतिगत पारिस्थितिकी तंत्र सक्रिय परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। जैसे-जैसे केंद्रीय बजट 2026 नजदीक आ रहा है, यह समय अधिक स्पष्टता, विश्वास और विज्ञान-आधारित निर्णय प्रक्रिया के प्रति नए सिरे से प्रतिबद्धता का अवसर प्रदान करता है। पिछले वर्ष के दौरान फसल सुरक्षा पर सार्वजनिक विमर्श विशेष रूप से सक्रिय रहा है। कीटनाशकों पर अक्सर केवल जोखिम के दृष्टिकोण से चर्चा होती है, जबकि फसल हानि रोकने, किसानों की आय की रक्षा करने और खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित रखने में उनकी भूमिका पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है। यह असंतुलन ऐसे समय में सामने आता है जब भारतीय किसान हर वर्ष कीटों, रोगों और खरपतवारों के कारण 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की फसलें खो देते हैं। यह ऐसी हानि है जिसे खाद्य सुरक्षा और निर्यात नेतृत्व की आकांक्षा रखने वाला कोई भी देश अनदेखा नहीं कर सकता।

सही संतुलन की जरूरत

प्रस्तावित कीटनाशक प्रबंधन विधेयक, 2025 का उद्देश्य भारत की नियामकीय रूपरेखा को आज की वास्तविकताओं के अनुरूप बनाना है। निगरानी को मजबूत करने, अनुपालन में सुधार लाने और किसानों व उपभोक्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने का इरादा समयानुकूल और आवश्यक है। हालांकि, सभी बुनियादी सुधारों की तरह इसका वास्तविक प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि इन उद्देश्यों को व्यवहार में कितनी प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है। इस दृष्टि से प्रस्तावित कीटनाशक प्रबंधन विधेयक को ऐसे बजट का पूरक समर्थन मिल सकता है, जो नियामकीय क्षमता, आधुनिक परीक्षण अवसंरचना और कुशल मूल्यांकन समयसीमा को सुदृढ़ करे। ये कदम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि नई रूपरेखा सुरक्षित कृषि की ओर पुल का काम करे। इसलिए बजट से फसल सुरक्षा क्षेत्र एक मूलभूत आर्थिक वास्तविकता की स्पष्ट स्वीकृति चाहता है। असल में उपज की रक्षा करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उसका उत्पादन करना। इसलिए फसल सुरक्षा उत्पाद उत्पादकता बनाए रखने में अनिवार्य भूमिका निभाते हैं। उन्हें आवश्यक कृषि इनपुट के रूप में मान्यता देना कृषि लचीलापन और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में उनके योगदान को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करेगा।

किसान-केंद्रित सुधार होगा जीएसटी को तर्कसंगत बनाना

बजट की सबसे तात्कालिक अपेक्षाओं में से एक है फसल सुरक्षा उत्पादों पर जीएसटी को अधिकतम 5% तक तर्कसंगत बनाना, ताकि उन्हें अन्य उर्वरकों (बायोस्टिमुलेंट/जैविक उत्पादों) के समान स्तर पर लाया जा सके। ऐसा कदम किसानों पर लागत के दबाव को कम करेगा और उच्च गुणवत्ता वाले वैध उत्पादों की उपलब्धता बढ़ाकर जिम्मेदार उपयोग को प्रोत्साहित करेगा। इस दृष्टि से यह रियायत से अधिक एक किसान-केंद्रित सुधार है, जो कृषि मूल्य श्रृंखला में उत्पादकता, सुरक्षा और अनुपालन को मजबूत करता है।

विनिर्माण का अवसर

नए फसल सुरक्षा अणुओं के निर्माण के लिए लक्षित प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) ढांचा वैश्विक स्तर के निवेश आकर्षित करने, घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को गहरा करने और भारत को अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं में अधिक मजबूती से एकीकृत करने में मदद कर सकता है। यह केवल आयात प्रतिस्थापन का मामला नहीं, बल्कि वैश्विक बाजारों के लिए भारत को एक विश्वसनीय और प्रतिस्पर्धी उत्पादक के रूप में स्थापित करने का अवसर है।

नवाचार को वित्तीय समर्थन

फसल सुरक्षा नवाचार विज्ञान-प्रधान, पूंजी-आधारित और स्वाभाविक रूप से दीर्घकालिक प्रक्रिया है। एक नए अणु के विकास में एक दशक से अधिक समय लग सकता है, जिसके लिए सतत निवेश और नियामकीय निश्चितता आवश्यक है। यद्यपि भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार को मान्यता देने में प्रगति की है, फिर भी कृषि अनुसंधान एवं विकास के लिए वित्तीय समर्थन को और मजबूत करने की गुंजाइश है। भारत फसल सुरक्षा को किसान लचीलापन, निर्यात वृद्धि और खाद्य सुरक्षा के लिए एक रणनीतिक साधन के रूप में सुदृढ़ कर सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वित्तीय और नियामकीय ढाँचे राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा के अनुरूप आगे बढ़ें। लिया गया निर्णय न केवल उद्योग के परिणामों को प्रभावित करेगा, बल्कि भारत की कृषि अर्थव्यवस्था की दीर्घकालिक स्थिरता और प्रतिस्पर्धात्मकता को भी आकार देगा।

इंश्योरेंस सेक्टर्स को भी चाहिए बड़ी राहत

बीमा
सेंट्रल डेस्क

इंश्योरेंस सेक्टर को बजट 2026 से काफी उम्मीदें हैं। बढ़ती मेडिकल लागत, कम इंश्योरेंस कवरेज और महंगे प्रीमियम को देखते हुए इस सेक्टर को बजट से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद भी की जा रही है। इंश्योरेंस सेक्टर को बजट से कई उम्मीदें होती हैं, खासकर टैक्स छूट और पॉलिसीधारकों के लिए सुविधाओं में वृद्धि की ऐसे में आइए जानते हैं इस बजट में इंश्योरेंस सेक्टर के लिए क्या कुछ खास पेश हो सकता है। एक फरवरी को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण केंद्रीय बजट 2026 पेश करने वाली है। ऐसे में अब देखना यह है कि बजट 2026 में वित्त मंत्री क्या क्या ऐलान करती हैं और इन ऐलानों से आम लोगों और अलग अलग सेक्टर्स को क्या क्या लाभ मिलता है। बात करें इंश्योरेंस सेक्टर की तो इंश्योरेंस सेक्टर को बजट 2026 से काफी उम्मीदें हैं। बढ़ती मेडिकल लागत, कम इंश्योरेंस कवरेज और महंगे प्रीमियम को देखते हुए इस सेक्टर को बजट से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद भी की जा रही है।

- वित्त मंत्री एक फरवरी को कर सकती हैं बड़े ऐलान

सेक्शन 80डी की टैक्स सीमा

इलाज और मेडिकल खर्च लगातार तेजी से बढ़ रहे हैं। बावजूद इसके इनकम टैक्स एक्ट की धारा 80डी के तहत हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम पर मिलने वाली 25,000 रुपये की टैक्स कटौती सीमा कई सालों से बिना बदलाव के बनी हुई है। ऐसे में इस समय में यह सीमा आम लोगों को पर्याप्त राहत नहीं देती है। ऐसे में अब उम्मीद है कि सरकार इस बजट में इस सीमा को 25,000 रुपये से बढ़ाकर 50,000 रुपये कर सकती है।

टर्म इंश्योरेंस पर फोकस

भारत में आज भी बड़ी संख्या में लोगों के पास पर्याप्त लाइफ इंश्योरेंस सुरक्षा कवर नहीं है। रिपोर्ट्स के अनुसार, देश में करीब 17 ट्रिलियन डॉलर का मॉर्टलिटी प्रोटेक्शन गैप मौजूद है यानी लोगों को जितनी जीवन बीमा सुरक्षा की जरूरत है, उसके मुकाबले लगभग 83 प्रतिशत जरूरतें अब भी पूरी नहीं हो पाई हैं। ऐसे में सरकार को टर्म इंश्योरेंस को प्रोत्साहन देना चाहिए। इसके लिए हेल्थ इंश्योरेंस पर टैक्स छूट, टर्म इंश्योरेंस प्रीमियम पर अलग टैक्स छूट मिलनी चाहिए।

जीएसटी और इंश्योरेंस प्रीमियम

इंश्योरेंस सेक्टर लंबे समय से जीएसटी से जुड़ी राहत की मांग कर रहा है. बीमा कंपनियां केवल जीएसटी से छूट नहीं, बल्कि पूरे सेक्टर को जीरो-रेटेड दर्जा दिए जाने की मांग कर रही हैं। अगर इंश्योरेंस को जीरो-रेटेड किया जाता है, तो कंपनियां अपने रोजमर्रा के खर्चों पर चुकाए गए टैक्स का इनपुट टैक्स क्रेडिट ले सकेंगी। इससे यह अतिरिक्त टैक्स बोझ प्रीमियम में नहीं जोड़ा जाएगा और ग्राहकों को कम प्रीमियम देना पड़ेगा।

यह भी चाहिए

- **टैक्स छूट:** इंश्योरेंस पॉलिसियों पर टैक्स छूट की सीमा बढ़ाने की मांग।
- **पॉलिसीधारकों के लिए सुविधाएं :** पॉलिसीधारकों के लिए क्लेम सेटलमेंट प्रक्रिया को सरल बनाने और अधिक सुविधाएं प्रदान करने की उम्मीद।
- **इंश्योरेंस पेनेट्रेशन बढ़ाना :** इंश्योरेंस सेवाओं को अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए सरकार से समर्थन की उम्मीद।
- **नियमों में बदलाव :** इंश्योरेंस सेक्टर को अधिक लेबल प्लेयरों को आकर्षित करने और विकास को बढ़ावा देने के लिए नियमों में बदलाव की उम्मीद।

यह भी जानिये

किस वित्त मंत्री ने पेश किए कितने बजट

भारत में हर साल 1 फरवरी के केंद्रीय बजट पेश किया जाता है। यह बजट भारत के वित्त मंत्री द्वारा पेश किया जाता है। हर साल की तरह इस साल भी केंद्रीय बजट 2026 आने वाली 1 फरवरी को भारत, की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किया जाएगा। 1947 में आजादी के बाद से अब तक भारत के कई वित्त मंत्रियों ने संसद में बजट पेश किए हैं। कुछ वित्त मंत्री थोड़े समय के लिए रहे और कम बजट पेश किए। वहीं, कुछ वित्त मंत्री लंबे समय के लिए रहें और उन्होनें कई बजट पेश किए। आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। हम आपको बताएंगे कि 1947 में आजादी के बाद से भारत के किन वित्त मंत्रियों ने कितने बजट पेश किए। आइए जानते हैं पूरी जानकारी।

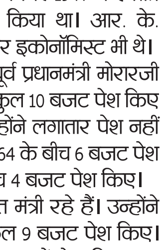

आजादी के बाद पहला बजट

- आर. के. शनमुखम चेट्टी आजादी के बाद भारत के पहले वित्त मंत्री थे. उन्होने 26 नवंबर 1947 में स्वतंत्र भारत का पहला बजट पेश किया था। आर. के. शनमुखम चेट्टी एक वकील और इकोनॉमिस्ट भी थे।
- भारत के सबसे ज्यादा बजट पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने पेश किए हैं. उन्होंने कुल 10 बजट पेश किए हैं। हालांकि, यह 10 बजट उन्होंने लगातार पेश नहीं किए। उन्होंने पहले 1959 से 1964 के बीच 6 बजट पेश किए और 1967 से 1969 के बीच 4 बजट पेश किए।
- पी चिदंबरम भारत के पूर्व वित्त मंत्री रहे हैं। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान कुल 9 बजट पेश किए। उन्होंने अपना पहला बजट 1996 में पेश किया था. वहीं साल 2004 से 2008 के बीच उन्होंने 5 बजट पेश किए. बाद में वह साल 2009 में एक बार फिर वित्त मंत्री बनें और उन्होंने साल 2013 से 2014 के बीच बजट पेश किए।
- पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने भी भारत में बजट पेश किए हैं। उन्होंने पहले वित्त मंत्री के रूप में भी कार्यकाल संभाला था। इस दौरान उन्होंने कुल 8 बजट पेश किए थे। उन्होंने पहले 3 बजट साल 1982 से 1984 के बीच पेश किए। वहीं साल 2009 से 2011 के बीच उन्होंने 5 बजट पेश किए।
- निर्मला सीतारमण भारत की वर्तमान वित्त मंत्री है और वह साल 2019 से इस पद पर है। अब तक वहां 8 बजट पेश कर चुकी हैं और आने वाली 1 फरवरी को वह 9वां बजट पेश करने वाली हैं।

बजट से कंपनियों को बड़ी उम्मीद, अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने का खाका तैयार

बजट में इन सेक्टर्स पर फोकस बढ़ेगा तो बदलेगी ग्रोथ की तस्वीर लॉजिस्टिक कॉस्ट घटेगी, निवेश बढ़ेगा और रोजगार पैदा होंगे

इंफ्रास्ट्रक्चर, मैन्युफैक्चरिंग, ग्रीन एनर्जी और एमएसएमई पर भी ध्यान दे केंद्र सरकार

इन्फ्रा
सेंट्रल डेस्क

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण एक फरवरी को आम बजट पेश करेंगी। इस बजट से भारतीय कंपनियों को कई बड़ी उम्मीदें हैं। उद्योगों से जुड़े विशेषज्ञों का कहना है कि केंद्र सरकार को इस बार बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने, मैन्युफैक्चरिंग में वैल्यू एडिशन बढ़ाने, ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देने और एमएसएमई सेक्टर को सस्ता और आसान कर्ज दिलाने पर खास फोकस करना चाहिए, ताकि लॉजिस्टिक कॉस्ट घटे और बिजनेस की रफ्तार बनी रहे। इंडस्ट्री के एक्सपर्ट्स का कहना है कि मौजूदा वैश्विक हालात में ग्रोथ बनाए रखने के लिए शॉर्ट टर्म राहत से ज्यादा जरूरी है कि अर्थव्यवस्था की बुनियाद को मजबूत किया जाए। कंपनियों का भरोसा बढ़ेगा व लंबे समय में देश की प्रतिस्पर्धा क्षमता भी बेहतर होगी।

ग्लोबल तनाव बढ़ा रहे चुनौतियां

अमेरिका के बढ़ते टैरिफ, लगातार चल रहे जियो-पॉलिटिक्स तनाव और सप्लाई चेन में बदलावों की वजह से कंपनियों के लिए अब लागत को काबू में रखना, नीति की स्थिरता और प्रोजेक्ट्स को समय पर पूरा करना बहुत अहम हो गया है। यही वजह है कि निवेश और व्यापार से जुड़े फैसले पहले से ज्यादा सोच-समझकर लिए जा रहे हैं।

भारत की स्थिति बेहतर

दुनिया भर में कंपनियों को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन भारत की घरेलू अर्थव्यवस्था पहले की तुलना में मजबूत स्थिति में है। इसकी वजह सरकार का पब्लिक इन्वेस्टमेंट पर लगातार फोकस, टैक्स सुधार और कंपनियों की बेहतर बैलेंस शीट है। अब चुनौती यह है कि इस मजबूती को लंबे समय तक टिकाऊ ग्रोथ में बदला जाए और मैन्युफैक्चरिंग व एक्सपोर्ट को और मजबूत किया जाए।

कम हुई लॉजिस्टिक कॉस्ट

पिछले एक दशक में सरकार ने सड़क, रेलवे और इंफ्रास्ट्रक्चर में लगातार निवेश बढ़ाया है, जिससे कनेक्टिविटी बेहतर हुई है। वित्तवर्ष 18 से वित्तवर्ष 26 के बीच इंफ्रास्ट्रक्चर पर बजट सपोर्ट करीब 12% सीएजीआर से बढ़ा है। इसका असर यह हुआ है कि देश की लॉजिस्टिक कॉस्ट घटकर अब करीब 7.97% रह गई है। चूंकि रेलवे सामान ढोने का सबसे सस्ता जरिया है, इसलिए बजट में रेलवे की क्षमता बढ़ाने और प्राइवेट सेक्टर के लिए कार्गो सुविधा बढ़ाने पर जोर जारी रहना चाहिए। इसके साथ ही सड़कों पर कैपेक्स बनाए रखते हुए बीओटी मॉडल के जरिए निजी निवेश को भी बढ़ावा देना जरूरी है।

मैन्युफैक्चरिंग को मजबूत करने की जरूरत

भारत में मैन्युफैक्चरिंग का योगदान जीडीपी में अभी करीब 17% है, जबकि सरकार का लक्ष्य इसे 25% तक ले जाना है। पीएलआई स्कीम (1.9 लाख करोड़, 14 सेक्टर) से कुछ फायदा जरूर हुआ है, लेकिन अब भी लोकल मैन्युफैक्चरिंग, लागत और एग्जिक्यूशन से जुड़ी कई चुनौतियां बनी हुई हैं। इसलिए बजट में रिसर्च एंड डेवलपमेंट, टेक्निकल स्किल और इनोवेशन पर टैक्स छूट या इंसेंटिव देने की जरूरत है, खासतौर पर इलेक्ट्रॉनिक्स, ईवी, डेटा सेंटर, एनर्जी स्टोरेज और सोलर जैसे सेक्टरों में।

ग्रीन एनर्जी पर भरोसेमंद पॉलिसी जरूरी

भारत ने 2030 तक जीडीपी की एमिशन इंटेंसिटी 45% घटाने, 500 जीडब्ल्यू नॉन-फॉसिल पावर कैपेसिटी हासिल करने और 2070 तक नेट-जीरो बनने का लक्ष्य रखा है। अब कंपनियों को जरूरत है स्पष्ट पॉलिसी और लॉन्ग टर्म फंडिंग की, ताकि वे भरोसे के साथ ग्रीन प्रोजेक्ट्स में निवेश कर सकें। बजट से उम्मीद है कि ग्रीन इन्वेस्टमेंट के लिए बेहतर फाइनेंसिंग सिस्टम बने, क्लीन एनर्जी क्लस्टर विकसित हों और प्रोजेक्ट्स को तेजी से लागू किया जा सके।

एमएसएमई को सस्ता और आसान लोन मिलना जरूरी

एमएसएमई सेक्टर देश के जीडीपी का करीब 30% और एक्सपोर्ट का 45% योगदान देता है, लेकिन इन्हें अब भी महंगा कर्ज और पेमेंट डिले जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बजट में ऐसे कदम जरूरी हैं, जिससे एमएसएमई को तेजी से और कम ब्याज पर लोन मिल सके। इसके साथ ही मुद्रा योजना के तहत लोन की सीमा बढ़ाने की जरूरत है, क्योंकि प्रोजेक्ट्स की लागत अब पहले से कहीं ज्यादा हो चुकी है।

इन क्षेत्रों को भी चाहिए बूस्ट

फार्मा और मेडटेक को लेकर बड़ी उम्मीद

बजट 2026 में सरकार को फार्मा और मेडिकल डिवाइस सेक्टर में आत्मनिर्भरता पर जोर देना चाहिए। उनका सुझाव है कि मेडिकल डिवाइस सेक्टर के लिए 10,000 करोड़ रुपये का पीएलआई पैकेज दिया जाना चाहिए, जिससे ऑन्कोलॉजी, इमेजिंग और इम्प्लांट जैसे सेगमेंट में घरेलू मैन्युफैक्चरिंग बढ़े। जीवन कसारा के मुताबिक, अगर यह पीएलआई सपोर्ट मिलता है, तो भारत की मेडिकल डिवाइसेज में 70% तक की आयात निर्भरता घट सकती है और 2030 तक देश में 1.2 लाख करोड़ रुपये का घरेलू उत्पादन खड़ा किया जा सकता है।

सुप्रीम कोर्ट ने स्कूलों में लड़कियों को फ्री में सैनेटरी पैड देने के दिए आदेश

जिले में एक भी जगह सार्वजनिक स्थान पर नहीं सैनेटरी पैड मशीन स्वास्थ्य विभाग में योजना बंद, आंगनबाड़ी और स्कूलों में उपलब्ध

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

सुप्रीम कोर्ट ने किशोरी व महिलाओं के लिए सैनेटरी पैड निशुल्क उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए है। यह मामला चार साल से कोर्ट में विचाराधीन था। सुप्रीम कोर्ट के इस एतिहासिक फैसले से सभी ने सराहना की है। सैनेटरी पैड से जुड़े सरकारी योजनाओं पर ध्यान दें तो इससे तीन विभाग सीधे तौर पर जुड़े है।

इसमें महिला एवं बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग और शिक्षा विभाग शामिल है। तीनों ही विभाग से जब इस मामले में बातचीत की गई तो सामने आया कि स्वास्थ्य विभाग में चल रही बाल किशोर योजना कई साल से बंद है। इस योजना के तहत पहले आशा वर्कर घर घर और स्कूलों में जाकर किशोरी व महिलाओं को निशुल्क सैनेटरी पैड बांटकर आती है, अब ऐसा नहीं है। शिक्षा विभाग की बात करें तो स्कूलों में सैनेटरी पैड उपलब्ध है, पर इसका प्रचार प्रसार कम है। कुछ चुनिंदा सरकारी स्कूलों में ही पैड को डिस्टाय करने की हिटरनुमा मशीन है।

अधिकांश स्कूलों में यह सुविधा नहीं है। तीसरा विभाग महिला एवं बाल विकास विभाग है। यह विभाग सिर्फ बीपीएल परिवार से जुड़ी किशोरी व महिलाओं को ही सैनेटरी पैड उपलब्ध करवाता है। यह पैड आंगनबाड़ी केंद्र के माध्यम से बांटे जाते है। दूसरी बात, जिला में कहीं भी सार्वजनिक जगह पर सैनेटरी पैड संबंधित मशीन नहीं है।

आंगनबाड़ी केंद्र के तहत बीपीएल से जुड़ी महिलाओं को मिल रहे फ्री में पैड

यहां जिला महिला एवं बाल विकास विभाग की मुखिया का पद खाली है। रेवाड़ी से एडिशनल चार्ज जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी शालू यादव संभाल रही है। उन्होंने हरिभूमि को बताया कि बीपीएल (गरीबी रेखा से नीचे) परिवारों की महिलाओं और किशोरियों के स्वास्थ्य एवं स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा एक अहम पहल की जा रही है। विभाग के माध्यम से जरूरतमंद महिलाओं और किशोरियों को निःशुल्क सैनेटरी पैड उपलब्ध कराए जा रहे हैं। यह वितरण आंगनबाड़ी केंद्रों के जरिए किया जा रहा है, ताकि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की अधिक से अधिक लाभार्थी तक यह सुविधा पहुंच सके।

स्वास्थ्य विभाग : कई सालों पहले बंद हो चुकी बाल किशोरी योजना

स्वास्थ्य विभाग में जिला डिप्टी सिविल सर्जन (स्कूल हेल्थ)डॉ विजय यादव ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग ने कई साल पहले बाल किशोरी योजना थी। उस योजना के तहत आशा वर्कर के माध्यम से स्कूल व घर घर जाकर किशोरी व महिलाओं को निशुल्क सैनेटरी पैड वितरित करती थी। अभी यह योजना बंद है।

शिक्षा विभाग : सभी स्कूलों में नहीं है डिस्टोय मशीन

शिक्षा विभाग के अधीन सरकारी व निजी प्राइवेट स्कूल जिला में करीब 500 है। सरकारी स्कूलों के लिए शिक्षा विभाग सैनेटरी पैड उपलब्ध करवाता है। अधिकांश बार तो यह पैड चंडीगढ़ से आते है। फिर भी कई बार उपलब्ध नहीं हो तो स्कूल मुखियाओं को यह हिदायत दी हुई है कि स्कूल फंडों से सैनेटरी पैड की उपलब्धता सुनिश्चित करें। स्कूलों में हेल्थ एंबेस्डर भी बनाए गए है। डीईओ विश्वेशवर कौशिक ने हरिभूमि को बताया कि सैनेटरी पैड को डिस्टाय करने के लिए कुछ स्कूलों में हीटर नुमा मशीन है। सभी में नहीं है। जहां तक अलग शौचालय की बात है तो सभी स्कूलों में छात्राओं के लिए अलग से शौचालय बनाए गए है। कुछ शौचालय की हालत खराब होने की वजह से उच्च अधिकारियों के पास डिमांड भेजी गई है।

खबर संक्षेप

सड़क हादसे का आरोपी चालक गिरफ्तार

रेवाड़ी। थाना सदर पुलिस ने सड़क हादसे के बाद मौके से फरार हुए एक चालक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने 30 जनवरी को हुए हादसे के बाद केस दर्ज किया था। हादसे में बाइक सवार युवक की मौत हो गई थी। पुलिस ने केस की जांच के बाद यूपी के शामली निवासी दीपक भटनागर को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के वाहन को भी पुलिस ने अपने कब्जे में ले लिया। मामले की तफ्तीश में शामिल करने के बाद उसे पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

हार्ट अटैक आने से युवक की मौत

कोसली। जुड्डी गांव में करीब 40 वर्षीय युवक की हार्ट अटैक के कारण मौत हो गई। परिजनों ने पुलिस को बताया कि संदीप को अचानक सीने में दर्द हुआ था। इसके बाद उसे परिजन अस्पताल लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने परिजनों के बयान दर्ज करने के बाद शव का पोस्टमार्टम करा दिया। बाद में युवक का गमगीन माहौल में अंतिम संस्कार कर दिया गया।

ट्रेलर की टक्कर से पैदल जा रहे व्यक्ति की मौत

नारनौल। बीती शाम को गांव नायन के बस स्टैंड के समीप हुए सड़क हादसे में पैदल जा रहे व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक की पहचान करीब 44 वर्षीय विजय कुमार निवासी गांव नायन के रूप में हुई है। मृतक के भाई अमर सिंह ने बताया कि वह और उसका भाई विजय कुमार खेत में जा रहे थे। जब वे नायन बस अड्डे पर पहुंचे तो अमर सिंह वहीं रुक गया, जबकि विजय कुमार थोड़ी दूर आगे पैदल चला गया। इसी दौरान पीछे से एक ट्रेलर तेज रफ्तार और लापरवाही से चलता हुआ आया और पैदल जा रहे विजय कुमार को जोरदार टक्कर मार दी।

सिहमा में हिंदू सम्मेलन आज

मंडी अटेली। हिंदू जागरण की दिशा को नई ऊर्जा एवं चेतना प्रदान करने के लिए सर्व हिंदू सनातन संस्कृति, सनातन धर्म और सामाजिक एकता के प्रतीक विशाल हिंदू सम्मेलन एक फरवरी को बाबा खेतानाथ स्कूल सिहमा में सुबह 11 बजे आयोजित किया जा रहा है। जानकारी देते हुए विजय सिंह ने बताया कि यह कार्यक्रम बाबा खेतानाथ हिंदू सम्मेलन समिति सिहमा मण्डल द्वारा किया जा रहा है। इस हिंदू सम्मेलन में संस्कृति, संस्कारों और गौरवशाली इतिहास पर चिंतन होगा। इस कार्यक्रम में क्षेत्र के विभिन्न गांवों के ग्रामीण बड़ी संख्या में उपस्थित रहेंगे।

स्वास्थ्य निरीक्षक की सेवानिवृत्ति

कनीना। स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत स्वास्थ्य निरीक्षक राजकुमार चौहान 32 वर्ष की सेवा के बाद शनिवार को सेवानिवृत्त हो गए। वे पीएचसी भोजावास में कार्यरत थे तथा सेवाकाल के दौरान उन्होंने विभिन्न स्थानों पर सेवाएं दी। उनकी सेवानिवृत्ति पर विदाई समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें उप नागरिक अस्पताल कनीना के प्रवर चिकित्सा अधिकारी डॉ. रेणू वर्मा, बहुउद्देशीय कार्यकर्ता अनिल रसूलपूरियां, डॉ. नेहा एवं डॉ. दिनेश द्वारा राजकुमार चौहान को पगड़ी पहनाकर व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया गया।मौके पर मुकेश चौहान, मुकेश बाई, गुलाब सिंह आदि मौजूद रहे।

मरीजों एवं तिमारदारों को हो रही परेशानी

'ट्रामा सेंटर' तो है, पर सीटी स्कैन और एमआरआई जैसी सुविधाओं का अभाव

- जांच एवं उपचार की पर्याप्त सुविधाएं नहीं होने के चलते ट्रामा सेंटर होने के बावजूद घायलों को हायर सेंटर के लिए कर दिया जाता है रेफर
- ट्रामा सेंटर आने वाले घायलों का औसत लगभग 10 मरीज है प्रतिदिन, जो महीने का लगभग 300 मरीज बनता है, इनमें से करीब 200 मरीजों को कर दिया जाता है रेफर

नारनौल। ट्रामा सेंटर भवन। फोटो : हरिभूमि

राजकुमार ▶▶ नारनौल

जिले के नागरिक अस्पताल में स्थापित ट्रामा सेंटर से लोगों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद थी, लेकिन उद्घाटन के महीनों बाद भी यह केंद्र जरूरी संसाधनों के अभाव में अपने उद्देश्य को पूरा नहीं कर पा रहा है। आधुनिक सुविधाओं के बिना चल रहा यह ट्रामा सेंटर गंभीर रूप से घायल मरीजों के लिए महज एक रेफरल सेंटर बनकर रह गया है, जिससे आमजन में रोष और निराशा बढ़ती जा रही है।

बता दें कि प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने गत 16 नवंबर 2025 को अनाज मंडी नारनौल में आयोजित महाराजा शूरसैनी जयंती समारोह के दौरान इस ट्रामा सेंटर का उद्घाटन किया था। उस समय इसे जिले के लिए एक बड़ी स्वास्थ्य उपलब्धि बताया गया था, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि ट्रामा सेंटर में आज भी न तो सीटी स्कैन की सुविधा है और न ही एमआरआई जांच उपलब्ध है।

गंभीर मरीजों की जांच के लिए इन्हीं सुविधाओं की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। सबसे चिंताजनक स्थिति यह है कि ट्रामा सेंटर में न्यूरो सर्जन की तैनाती नहीं है। सिर में गंभीर चोट (हेड इंजरी) के मामलों में न्यूरो सर्जन की भूमिका बेहद अहम होती है, लेकिन यहां ऐसे मरीजों को बिना प्राथमिक उपचार के ही हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया जाता है और तिमारदार मजबूरीवश घायल को जयपुर, गुरुग्राम, रोहतक या रेवाड़ी ले जाने को मजबूर होते हैं। इसके अलावा अस्पताल में एमडी मेडिसन चिकित्सक की भी भारी कमी बताई जा रही है, जिससे गंभीर रोगियों के इलाज में बाधा आ रही है।

हेड इंजरी और चेस्ट इंजरी के मामलों में स्थिति और भी गंभीर: प्रतिदिन सड़क दुर्घटनाओं, हादसों और अन्य आकस्मिक घटनाओं में घायल मरीज नारनौल के ट्रामा सेंटर लाए जाते हैं, लेकिन जांच व इलाज की पर्याप्त सुविधा न होने के कारण उन्हें समय पर समुचित उपचार नहीं मिल पा रहा।

ट्रामा सेंटर में आने वाले घायलों का औसत लगभग 10 मरीज प्रतिदिन है, जो महीने का लगभग 300 मरीज बनता है। इनमें से करीब 200 मरीजों को रेफर कर दिया जाता है। खासकर हेड इंजरी और चेस्ट इंजरी के मामलों में स्थिति और भी गंभीर हो जाती है। डॉक्टर मजबूरी में ऐसे मरीजों को तुरंत उच्च चिकित्सा संस्थानों में रेफर कर देते हैं, जिससे 'गोल्डन आवर' में मिलने वाला जीवनरक्षक उपचार छूट जाता है।

यह कहते हैं चिकित्साधिकारी

एमआरआई एवं न्यूरो की सुविधाएं तो नहीं हैं। वैसे भी यह उच्च स्तरीय सुविधाएं बड़े अस्पतालों में भी बमुश्किल ही मिलती हैं। सरकार यह सुविधाएं अब पीपीपी मोड पर उपलब्ध करवाती है। सीटी स्कैन के लिए टेंडर लगे हुए हैं। वैसे आज शनिवार को ही विधायक ओमप्रकाश यादव यहां आए थे, जिन्हें यहां की मूलभूत जरूरतों से अवगत कराया गया है। 100 बैड का अस्पताल होने पर इसे 200 बैड में तब्दील करने की मांग की गई है, ताकि सुविधाएं बढ़ सकें। डाक्टर एवं स्टॉफ एवं जांच सुविधाएं मिल सके। कोशिश की जा रही है, जल्दी ही सुधार आने की उम्मीद है।

-डा. सरजीत सिंह, आरएमओ, ट्रामा सेंटर, नारनौल

यह बोले लोग

स्थानीय लोगों राहुल, विजय, संजय, नरेश आदि का कहना है कि यदि ट्रामा सेंटर में सीटी स्कैन, एमआरआई और विशेषज्ञ डॉक्टरों की व्यवस्था कर दी जाए तो सैकड़ों लोगों की जान बचाई जा सकती है। जिले से प्रतिदिन बड़ी संख्या में मरीज रेफर होना इस बात का प्रमाण है कि ट्रामा सेंटर अपने मूल उद्देश्य से भटक गया है।

तिमारदार होते रहते हैं परेशान

मरीजों के साथ आए परिजनों को भी भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कई बार आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण निजी अस्पतालों में इलाज कराना उनके लिए संभव नहीं होता, वहीं सरकारी अस्पताल में भी समुचित सुविधा न मिलने से वे असहाय महसूस करते हैं। एंबुलेंस, समय और धन- तीनों की मार झेलनी पड़ती है।

स्वास्थ्य मंत्री इसी जिले से

विडंबना यह भी है कि प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह स्वयं जिले की अटेली विधानसभा से विधायक हैं। इसके बावजूद महेंद्रगढ़ जिले के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल में इस तरह की बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव होना कई सवाल खड़े करता है।

नारनौल। प्रदर्शन उपरांत निगम अधिकारी को ज्ञापन सौंपते बिजली कर्मचारी।

बिजली कर्मचारियों ने की भूख हड़ताल

ऑनलाइन ट्रांसफर पॉलिसी के विरोध में प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

ऑल हरियाणा पॉवर कारपोरेशन यूनियन सर्कल नारनौल के कर्मचारियों द्वारा राज्य कमेटी के आह्वान पर एसई ऑफिस के प्रांगण में ऑनलाइन ट्रांसफर पॉलिसी के विरोध में सुबह 11 बजे से शाम चार बजे तक सांकेतिक भूख हड़ताल एवं प्रदर्शन का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता सर्कल सचिव किरोड़ीमल सैनी ने की।

आंदोलनकारी कर्मचारियों को संबोधित करते हुए सर्कल सचिव किरोड़ीमल सैनी ने कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा बनाई गई ऑनलाइन पॉलिसी के बिजली निगम में दूरगामी दुष्परिणाम निकलेंगे, क्योंकि बिजली निगम एक तकनीकी, संवेदनशील एवं आवश्यक सेवाओं से जुड़ा विभाग है। इस विभाग की कार्यप्रणाली क्षेत्र विशेष की विद्युत संरचना ट्रांसमिशन लाइनों, सब स्टेशनों एवं उपकरणों की गहरी जानकारी पर आधारित है।

एएलएम, एलएम, जेई तथा क्लर्क आदि कर्मचारियों को उनके क्षेत्र की तकनीकी विशेषताओं का अच्छा अनुभव होता है, जो कि सुरक्षा एवं कार्यकुशलता के लिए अत्यंत आवश्यक है। ऐसे में ऑनलाइन पॉलिसी को बिजली निगम में लागू करने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त ऑल हरियाणा पॉवर कारपोरेशन वर्कर यूनियन की विशेष मांग है कि सरकार तुरंत प्रभाव से एचकेआरएन के कर्मचारियों को नियमित करे।

ये रहे मौजूद

इस प्रदर्शन में सुरेश सैनी, महेश यादव, विनोद कुमार, कृष्ण कुमार, विकास यादव, ताराचंद, पूर्णसिंह, खगेश, भूपेंद्र, अशोक भाटी, अमित, दिनेश कुमार, नवीन कुमार आदि कर्मचारी एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

गुरुग्राम के नितिन विहार में रह रहे पांच पर केस

- पीड़िता का आरोप है कि पति ने कई बार उसे जान से मारने की कोशिश की

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

एक विवाहिता ने अपने ससुराल पक्ष पर दहेज उत्पीड़न, मारपीट, जान से मारने की कोशिश और जबरन बार-बार गर्भपात कराने जैसे गंभीर आरोप लगाते हुए एसपी नारनौल को शिकायत दी, जिस पर महिला थाना पुलिस ने पति समेत पांच लोगों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

महेंद्रगढ़ की शास्त्री कॉलोनी निवासी पीड़िता ने बताया कि एसपी नारनौल को शिकायत दी थी। शिकायत में बताया कि उसकी शादी एक फरवरी 2017 को गुरुग्राम के नितिन विहार निवासी मोहित से हिंदू रीति-रिवाज से हुई थी। तब शादी में उसके माता-पिता ने हैसियत से बढ़कर करीब 50-60 लाख रुपये खर्च किए थे और स्कॉर्पियो गाड़ी, सोना-चांदी के आभूषण तथा नगदी दी थी। जबकि रिश्ता तय करते समय दहेज की कोई मांग नहीं बताई गई थी, लेकिन शादी से कुछ दिन पहले गाड़ी, सोना और नकदी की मांग रखी गई।

पीड़िता का आरोप है कि शादी के बाद सास, ससुर, पति मोहित, ननद और ननदोई उसे कम दहेज लाने के ताने देते थे और आए दिन उसके साथ मारपीट की जाती थी। कई बार खाना नहीं दिया जाता और कमरे में बंद रखा जाता था। पहली संतान बेटी होने के बाद भी उत्पीड़न कम नहीं हुआ। पीड़िता ने आरोप लगाया कि दूसरी बार गर्भवती होने पर साजिश के तहत जबरन गर्भपात कराया गया। ननद ने डॉक्टरों से संपर्क करके गलत फायदा उठाया। शिकायत में आरोप है कि इसके बाद भी मायके से नकदी लाने का दबाव बनाया जाता रहा। वर्ष 2023 में ननद की शादी के दौरान भी उससे नकद और गहने मंगवाए गए।

पीड़िता के अनुसार 2024 में फिर से गर्भवती होने पर दोबारा बिना सहमति के गर्भपात कराया गया, जिससे उसका स्वास्थ्य गंभीर रूप से बिगड़ गया। लगातार प्रताड़ना और इलाज न मिलने से वह टीबी जैसी बीमारी से ग्रस्त हो गई। पीड़िता का आरोप है कि पति ने कई बार उसे जान से मारने की कोशिश की।

अंडरपास निर्माण की त्रुटियों को दूर करने के लिए सौंपा ज्ञापन

मंडी अटेली। अंडरपास निर्माण संघर्ष समिति एलसी 30 अटेली मण्डी ने संघर्ष समिति के संचालक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद खरब की अगुवाई में प्रकाश खरब, हनुमान, मास्टर सुबे सिंह के प्रतिनिधि मंडल ने शनिवार को अटेली मण्डी रेलवे स्टेशन मास्टर के मार्फत जीएम उत्तर पश्चिम रेलवे मंडल जयपुर एवं सीजेएम डीएफसीसी आईएल जयपुर को अंडरपास की त्रुटियों को ठीक करने व रेलवे स्टेशन पर स्थाई पुलिस चौकी बनाने के ज्ञापन सौंपा। ट्रेक की दक्षिण दिशा में टीनशेड, बरसात का पानी रिचार्ज बोर में डालने, अंडरपास रास्ता की मरम्मत कार्य सहित ज्ञापन पर शीघ्र कार्रवाई करने का अनुरोध किया है।

48 पुलिस कर्मचारियों ने करवाई स्वास्थ्य जांच

रेवाड़ी। कैंप मे स्वास्थ्य जांच कराते हुए पुलिसकर्मी। फोटो : हरिभूमि

- पुलिस कर्मचारियों के साथ उनके परिजनों की आंखों की भी जांच की गई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

शनिवार को थाना सदर में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। थाना प्रबंधक निरीक्षक राजेन्द्र कुमार ने कैंप का शुभारंभ किया। वरिष्ठ चिकित्सकों ने पुलिस कर्मचारियों व उनके परिजनों के बीपी, हार्ट, शुगर सहित अन्य जांच करके परामर्श दिया। पुलिस कर्मचारियों के साथ उनके परिजनों की आंखों की भी जांच की गई। शिविर में करीब 48 पुलिस कर्मचारियों व उनके परिजनों की स्वास्थ्य जांच की गई। इस अवसर पर डा. पुरु कपूर, मैनेजर तरुण चौहान, डा. मनोज कुमार, सीनियर ऑपटम नवीन कुमार व सहायक मैनेजर मनीषा सैनी सहित नर्सिंग स्टाफ व पुलिस कर्मचारी मौजूद थे। एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य का सर्वाधिक महत्व है। स्वास्थ्य के बिना सभी सुविधाएं महत्वहीन हैं। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति तन और मन से स्वस्थ होता है, वह संसार का सबसे सुखी प्राणी है, क्योंकि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का वास होता है। निष्काम भाव से कर्म करते हैं वे हमेशा स्वस्थ बने रहते हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए समय पर किए गए उपचार का महत्व भी कम नहीं है। यदि व्यक्ति बीमार हो तो उसे तुरंत योग्य चिकित्सक की मदद लेनी चाहिए।

रोजगार विभाग से सेवानिवृत्त हुए सतीश यादव के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित

रेवाड़ी। हरियाणा के रोजगार विभाग पंचकुला, रेवाड़ी, नूंह और अंबाला सहित अन्य जगहों पर 36 साल तक अपनी निष्ठा पूर्ण सेवाएं देने के बाद अधीक्षक पद से सेवानिवृत्त होने वाले सतीश यादव के सम्मान में शहर के जांगिड़ भवन में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्यालय चंडीगढ़ से लेकर जिला नूंह तक के रोजगार विभाग के अधिकारी और कर्मचारी शामिल हुए। जिला रोजगार अधिकारी एसएस रावत ने कहा कि निष्ठा पूर्वक जनसेवा करना भी मानव धर्म है। सतीश यादव ने बेरोजगारी झेल रहे युवाओं के दर्द को महसूस कर उनको विभाग की योजनाओं से जोड़कर राहत देने का काम किया। कार्यक्रम में पंचकूला से यशपाल और बीर सिंह सहायक, नूंह से सहायक संदीप चौहान, लिपिक दीपक यादव, रेवाड़ी रोजगार विभाग से उपाधीक्षक बिजेंद्र सिंह, अशोक यादव सेवानिवृत्त उप निदेशक, आरएस सांभारिया सेवानिवृत्त मंडल रोजगार अधिकारी, उषा मंगला सेवानिवृत्त सहायक रोजगार अधिकारी, कैप्टन वीर सिंह यादव, सूबेदार राममेहर यादव, रेवाड़ी नगर परिषद के पूर्व प्रधान विजय राव व धारूहेड़ा नगर पालिका के अध्यक्ष कंवर सिंह यादव सहित सेवानिवत्त अधीक्षक सतीश यादव के परिजन मौजूद थे। सभी ने सतीश यादव को उपहार भेंट किए। मंच संचालन कवि आलोक भांडोरिया ने किया।

रेवाड़ी। सतीश यादव का सम्मान करते स्टाप सदस्य। फोटो : हरिभूमि

भारत-ईयू व्यापार समझौता अर्थव्यवस्था के लिए संजीवनी: डा. वंदना

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

भारत और यूरोपीय संघ के बीच हुए ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते को भाजपा जिला अध्यक्ष डा. वंदना पोपली ने भारत की वैश्विक शक्ति का एक नया स्वर्णिम अध्याय बताया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में यह मदर ऑफ ऑल डील्स न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करेगी, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत के बढ़ते कद का प्रमाण भी है। डा. पोपली ने कहा कि जब दुनिया भर में ट्रंप टैरिफ और संरक्षणवाद के कारण व्यापारिक अस्थिरता का माहौल है, ऐसे समय में यह समझौता भारत के लिए एक इकनॉमिक शील्ड की तरह काम करेगा। यह सौदा अमेरिकी नीतियों से संभावित जोखिमों को कम कर हमारे निर्यातकों को यूरोप का एक विशाल और सुरक्षित बाजार प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि यह समझौता केवल व्यापारिक संधि नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री मोदी की दूरदर्शी कूटनीति का परिणाम है, जिसने वैश्विक अनिश्चितता के दौर में भारतीय अर्थव्यवस्था को एक सुरक्षित किला प्रदान किया है।

युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे

डा. वंदना पोपली

डा. वंदना ने इस समझौते से हरियाणा का ऑटो हब और रेवाड़ी-बावल के इंजीनियरिंग उद्योगों को यूरोपीय तकनीक और निवेश का सीधा लाभ मिलेगा। इसके अतिरिक्त हरियाणा के टेक्सटाइल और लघु उद्योगों के लिए यूरोप के द्वार अब बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के खुल जाएंगे, जिससे लाखों युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। उन्होंने कहा कि हरियाणा के प्रोफेशनल्स को अब यूरोप के 144 सर्विस सेक्टर्स में आसानी से काम करने का मौका मिलेगा। इस डील के तहत भारत के 99 प्रतिशत से अधिक निर्यात उत्पादों जैसे कपड़ा, चमड़ा, आभूषण और कृषि उत्पाद पर टैरिफ खत्म होने से देश के विदेशी मुद्रा भंडार में भारी बढ़ोतरी होगी। पोपली ने कहा कि आज भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर तेजी से अग्रसर है। इस समझौते से रेवाड़ी जैसे औद्योगिक जिलों के उत्पादों को वैश्विक पहचान मिलेगी।

ग्राम पंचायत कोसली
खंड नाहड़, जिला रेवाड़ी, हरियाणा
सफाई कर्मचारी की नियुक्ति हेतु सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत कोसली में सफाई कर्मचारी लाजवंती पत्नी श्री परसराम की आयु 65 वर्ष पूर्ण होने पर सेवानिवृत्त हो गई है। अब उनके स्थान पर ग्राम पंचायत में नया सफाई कर्मचारी नियुक्त किया जाना है। जिसके लिये इच्छुक व्यक्ति दिनांक 02.02.2026 से 13.02.2026 तक खंड विकास अधिकारी नाहड़ के पास आवेदन जमा करा सकता है। 16.02.2026 को सफाई कर्मचारी नियुक्त किये जाने बारे साक्षात्कार भी वहीं होगा।

सरपंच-रामकिशन (ग्राम पंचायत कोसली)
खंड नाहड़, जिला रेवाड़ी (हरियाणा) फोन नं. 9416578178

लोगों से अपील यदि कोई भी संदिग्ध गतिविधि दिखे तो तुरंत उस की सूचना पुलिस को दें

युवा ही देश का भविष्य, पढ़ाई और खेलों में ध्यान लगाकर नशे जैसी बुरी आदतों से रहें दूर: रामपाल

नशा मुक्ति टीम ने गांव करनावास, खलीलपुरी व मांढ़ैया कलां में ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभावों को लेकर किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। ग्रामीणों को जागरूक करते हुए पुलिस टीम। फोटो : हरिभूमि

पुलिस अधीक्षक हेमेंद्र कुमार मीणा के मार्गदर्शन में नशा मुक्त अभियान अंतर्गत पुलिस की ओर से नशा मुक्ति और समाजिक जागरूकता की दिशा में निरंतर प्रयास किए जा रहे है। निरीक्षक रामपाल के नेतृत्व में गठित नशा मुक्ति टीम ने शनिवार को गांव करनावास, खलीलपुरी व मांढ़ैया कलां में ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक किया। इस अवसर पर नशा निरीक्षक रामपाल ने कहा कि नशा व्यक्ति के शरीर, परिवार और समाज तीनों का सबसे बड़ा शत्रु है। यह न केवल स्वास्थ्य को बर्बाद करता है, बल्कि युवाओं का भविष्य भी अंधकारमय कर देता है। उन्होंने कहा कि युवा देश का भविष्य है, जिनको पढ़ाई, खेल और अपने सपनों में ध्यान लगाकर नशे जैसी बुरी आदतों से हमेशा दूर रहना चाहिए। अगर गांव या आस-पास कोई भी संदिग्ध गतिविधि दिखे तो तुरंत पुलिस को सूचना दें। नशा मुक्ति टीम ने कहा कि नशा शरीर ही नहीं, बल्कि जीवन और समाज के लिए भी जहर है। उन्होंने ग्रामीणों से अभियान से जुड़ने का आह्वान किया व सभी को नशामुक्त जिला बनाने में योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

पुलिस टीम ने किया साइबर अपराधों से सतर्क रहने का आह्वान

पुलिस टीम ने ग्रामीणों को साइबर अपराध के खतरों से भी अवगत कराया। उन्होंने बताया कि आजकल अपराधी फोन कॉल, सोशल मीडिया या अन्य माध्यमों से व्यक्तिगत जानकारी जैसे ओटीपी व पासवर्ड आदि हासिल करने की कोशिश करते हैं। ऐसे में सभी को सतर्क रहना चाहिए और किसी भी अनजान व्यक्ति से अपनी निजी जानकारी साझा नहीं करनी चाहिए। किसी भी साइबर ठगी होने पर साइबर राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर 1930 पर कॉल करें। उन्होंने बताया कि गोल्डन ऑवर में दी गई शिकायत पर राशि को ठगों के खातों में जाने से पहले उन्हें फ्रीज कराया जा सकता है।

ट्रैफिक नियमों की भी दी जानकारी

ग्रामीणों को यातायात नियमों की भी जानकारी दी गई। पुलिस टीम ने कहा कि सड़क पर वाहन चलाते समय नियमों का पालन करना जरूरी है। हेलमेट, सीट बेल्ट का प्रयोग और यातायात संकेतों का पालन हमारी सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। पुलिस टीम ने सभी से अपील करते हुए कहा कि यदि कोई भी असामाजिक तत्व, संदिग्ध व्यक्ति या वाहन दिखाई दे या आपातकालीन स्थिति हो तो तुरंत डायल 112 पर सूचना दें। उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति नशा करता है या नशा बेचता है तो इसकी सूचना मानस हेल्पलाइन नंबर 1933 पर करें। इस मौके पर ग्रामीणों ने नशा और साइबर अपराधों से दूर रहने की शपथ भी ली।

खबर संक्षेप

मुख्याध्यापक सुरेन्द्र सिंह हुए सेवानिवृत्त

रेवाड़ी। राजकीय उच्च विद्यालय मोहदीनपुर में मुख्याध्यापक सुरेन्द्र सिंह के सम्मान में विद्यालय परिवार व गांव की ओर से विदाई समारोह का आयोजन किया गया। अध्यापक आनंद पाल ने बताया कि सुरेन्द्र सिंह ने 28 नवंबर 1995 में बतौर जेबीटी अध्यापक शिक्षा विभाग में पदभार ग्रहण किया था। इस दौरान उन्होंने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रोहड़ाई, घासेडा, गाजी गोपालपुर व अंतिम पड़ाव में अपने स्वयं के गांव के विद्यालय में उत्कृष्ट सेवाएं दी। उन्होंने मुख्याध्यापक रहते विधालय का चहुंमुखी विकास कराया। ग्राम पंचायत व विद्यालय परिवार ने पगड़ी पहनाकर उनका सम्मान किया गया। मुख्याध्यापक ने समस्त स्टाफ का सहयोग देने के लिए आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर सरपंच विजयपाल, जयकिशन यादव, कैप्टन ओ पी यादव, पूर्व सरपंच राजबहादुर, स्वामी यशदेव, औम मुनि, बाबू ओमप्रकाश, अध्यापिका क्षमा यादव, सरोज, सुमित्रा, सुनिता, अध्यापक विजय सिंह, भरत सिंह, अजय यादव, पवन कुमार, राजेंद्र व नरेश उपस्थित थे। मंच संचालन दिनेश यादव ने किया।

सीएसआर के तहत छात्राओं को वितरित की साइकिलें

मीरपुर। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की ओर से कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी यानि सीएसआर के अंतर्गत राजकीय उच्च विद्यालय मीरपुर में अध्ययनरत छात्राओं को साइकिलों का वितरण किया गया। इस पहल का उद्देश्य छात्राओं को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना व विद्यालय आने-जाने में सुविधा प्रदान करना है। इस अवसर पर बैंक की ओर से रीजनल मैनेजर राधेश्याम महेला, मैनेजर एचआर अरुण, डिप्टी मैनेजर एचआर रानु यादव, मुख्य प्रबंधक महेश चंद्र व मैनेजर महेश यादव उपस्थित थे। इस मौके पर एसबीआई के रीजनल मैनेजर राधेश्याम महेला ने छात्र-छात्राओं को कड़ी मेहनत, अनुशासन एवं लगन के साथ पढ़ाई कर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में मुख्य अध्यापिका सुनीता, मुकेश कुमार व अजय कुमार सहित पूर्व मुख्य अध्यापक राव उदयराज व समाज सेवी मुकेश यादव उपस्थित थे। सभी ने इस पहल के लिए एसबीआई के अधिकारियों का आभार व्यक्त किया।

विकास कार्यो का 26 करोड़ से अधिक का बजट पास

धारूहेड़ा। नगर पालिका धारूहेड़ा की बोर्ड बैठक में वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए करीब 26 करोड़ 15 लाख 39 हजार 503 रुपये का अनुमानित बजट पारित किया गया। यह बजट महज महज 20 मिनट में पारित कर दिया गया। चेयरमैन कंवर सिंह की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में बजट प्रस्तावों को बहुमत के आधार पर मंजूरी दी गई। नगर पालिका सचिव सुमित शर्मा ने आय-व्यय की जानकारी दी। बैठक में पार्षदों ने भी विकास कार्यो को लेकर अपने सुझाव रखे। इसके बाद लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत बजट को स्वीकृति प्रदान की गई। नगर पालिका के बजट में आय के प्रमुख स्रोतों में कर, शुल्क, सरकारी अनुदान और अन्य मद शामिल हैं, जबकि व्यय पक्ष में स्थापना खर्च, प्रशासनिक व्यय, स्वच्छता एवं ठोस कचरा प्रबंधन, संचालन एवं रखरखाव तथा विकास कार्यों पर विशेष जोर दिया गया। बैठक में तेजी से बजट पारित होने को लेकर नगर पालिका की राजनीति में हलचल देखी जा रही है। क्योंकि इस वर्ष नगरपालिका के चुनाव होने है और मार्च में नगरपालिका भंग हो सकती है।

राज्य स्तरीय पशुधन प्रदर्शनी 6 से 8 फरवरी तक

- सर्वश्रेष्ठ पशुओं के पशुपालकों को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर किया जाएगा सम्मानित

रेवाड़ी। हरियाणा पशुपालन एवं डेयरी विभाग की ओर से कुरुक्षेत्र में 6 फरवरी से 8 फरवरी तक तीन दिवसीय 41वीं राज्य स्तरीय पशुधन प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा। इस राज्य स्तरीय प्रदर्शनी में प्रदेशभर से लगभग 1500 उन्नत नस्ल के पशु विभिन्न श्रेणियों में भाग लेंगे। डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि इस प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य उत्तम नस्ल के पशुओं का प्रदर्शन कर नस्ल सुधार के लिए पशुपालकों को प्रेरित करना तथा दूध उत्पादन में वृद्धि कर किसानों की आय बढ़ाना है। उन्होंने विभाग के संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में पशुपालकों से आग्रह करें कि वे अपने उत्तम नस्ल के पशुओं का विवरण संबंधित पशु चिकित्सक को उपलब्ध कराएं तथा पशु प्रवेश याचिका समय रहते पूर्ण करें। डीसी ने बताया कि प्रदर्शनी में मुर्रा भैंस, देसी नस्ल की गाय में हरियाणा, साहीवाल, गिर, थारपारकर, साही व बेलाही, क्रॉस ब्रीड गाय, घोड़े व गधे, ऊंट, भेड़ नाली नस्ल, हिसार डेल नस्ल, बकरी एवं गोशाला पशु भाग लेंगे। उन्होंने बताया कि प्रदर्शनी के दौरान चयनित सर्वश्रेष्ठ पशुओं के पशुपालकों को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। पशुपालकों को प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए अपने साथ आधार कार्ड, पैन कार्ड, बैंक पासबुक, फसल चेक तथा परिवार पहचान पत्र लाना अनिवार्य होगा।

नाले में गिरे बुजुर्ग ने ट्रॉमा सेंटर में तोड़ा दम

धारूहेड़ा। शुक्रवार की रात विपुल गार्डन के पास नाले में गिरे लगभग 70 वर्षीय वृद्ध ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया। अलावलपुर निवासी बुजुर्ग सीताराम रात के समय घर से टहलने के लिए निकले थे। विपुल गार्डन के पास अचानक पैर फिसलने से वृद्ध नाले में गिर गए। आसपास के लोगों ने बुजुर्ग को नाले से निकालकर पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने बुजुर्ग को रेवाड़ी के ट्रॉमा सेंटर में दाखिल कराया था। देर रात डॉक्टरों ने बुजुर्ग को मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने के बाद मृतक के परिजन भी अस्पताल पहुंच गए। पुलिस ने शनिवार को पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों के हवाले कर दिया।

जिले में 13 फरवरी तक चलाया जाएगा स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान: डीसी

डीसी ने कहा सरकार का हरियाणा को कुष्ठ रोग-मुक्त बनाने का लक्ष्य

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि हरियाणा सरकार की ओर से प्रदेशभर में स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान 13 फरवरी तक चलाया जाएगा। डीसी ने नागरिकों से आह्वान किया कि कुष्ठ रोगियों के साथ भेदभाव खत्म करें तथा उनकी गरिमा सुनिश्चित करें। डीसी ने बताया कि स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान वर्ष 2017 से हर साल राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के तहत आयोजित किया जा रहा है। हर साल, केंद्र सरकार इस अभियान के लिए एक खास थीम तय करती है। वर्ष 2026 की थीम भेदभाव खत्म करें, गरिमा सुनिश्चित करें है। उन्होंने बताया कि कुष्ठ रोग के बारे में सही जानकारी की कमी के कारण, समाज में इस बीमारी के बारे में कई गलतफहमियां अभी भी मौजूद हैं। इन गलतफहमियों को दूर करने और जागरूकता फैलाने के लिए स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य कुष्ठ रोग से प्रभावित लोगों के प्रति सम्मानजनक व्यवहार सुनिश्चित करना और किसी भी प्रकार के भेदभाव को रोकना है।

डीसी ने बताया कि कुष्ठ रोग एक आम बीमारी है। यह बैक्टीरिया के कारण होती है, जो मुख्य रूप से त्वचा और नसों को प्रभावित करती है। यह सबसे कम संक्रामक बीमारियों में से एक है। यह आम सर्दी और खांसी से भी कम संक्रामक है। यह किसी भी उम्र के पुरुष या महिला को प्रभावित कर सकती है। इस बीमारी का समय पर इलाज न किया जाए, तो यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैल सकती है और दिव्यांगता का कारण बन सकती है। हालांकि, अगर इलाज समय पर शुरू हो जाए, तो संक्रमण के फैलने को रोका जा सकता है।

बिना अनुमति के सड़कें तोड़ने पर होगी कार्रवाई

- नप ने विभागों को लिखा पत्र
- नए या पुराने काम के लिए सड़क तोड़ने से पहले लिखित अनुमति लेना अनिवार्य

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

शहर में बिना अनुमति के सड़कें और गलियां तोड़ने वाले सरकारी विभागों और निजी व्यक्तियों पर अब नगर परिषद की ओर से कार्रवाई की जाएगी। इस संबंध में नगर परिषद के कार्यकारी अधिकारी सुशील कुमार भुक्कल ने सभी विभागों के विभागाध्यक्षों को पत्र लिखा है। ईओ ने कहा कि नगर परिषद की सीमा में किसी भी नए या पुराने काम के लिए सड़क तोड़ने से पहले लिखित अनुमति लेना अनिवार्य होगा। उन्होंने कहा कि यदि कोई भी विभाग विकास कार्य या मरम्मत के लिए सड़क तोड़ता है, तो उसे पहले नप कार्यालय को सूचित करना होगा। अनुमति मिलने के बाद ही रोड कटिंग की जा सकेगी। यह नियम केवल विभागों ही नहीं, बल्कि निजी स्तर पर काम कराने वाले आम नागरिकों पर भी लागू होगा। ईओ ने कहा कि इस बारे में नगर परिषद की अपनी तकनीकी शाखा के अधिकारियों और कर्मचारियों को भी आदेश जारी किए गए हैं कि वे अपने क्षेत्रों में नजर रखें कि कहीं भी अवैध तरीके से रोड कटिंग न की जाए। ईओ ने बताया कि पिछले वर्ष कई विभागों ने बिना अनुमति और बिना सूचना के सड़कें खोद दी थीं।

रक्तदान शिविर में 90 यूनिट रक्त एकत्रित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रोटरी क्लब रेवाड़ी मेन ने आमजन सेवा संगठन के सहयोग से कोसली में रक्तदान शिविर का आयोजन किया।शिविर में 90 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। रोटरी क्लब की अध्यक्ष नेहा शर्मा ने बताया कि यह इस साल क्लब का 10वां रक्तदान शिविर था और अब तक 1500 यूनिट रक्त एकत्र किया जा चुका है। आम जन सेवा संगठन के चेयरमैन सुखबीर ने कहा कि यह रोटरी क्लब के साथ दूसरा रक्तदान शिविर था और यह सहयोग भविष्य में भी जारी रहेगा। शिविर का उद्घाटन गांव के वरिष्ठ नागरिकों ने किया। आमजन सेवा संगठन की कोऑर्डिनेटर डा. निधि ने ग्रामीणों का स्वागत किया। रक्तदान शिविर में जोगिंदर मेमोरियल ब्लड बैंक ने सेवाएं दीं। रोटरी क्लब के सचिव अनुकूल शर्मा ने कहा कि क्लब इस साल 2000 यूनिट रक्त का लक्ष्य हासिल करेगा। रक्तदान शिविर के प्रोजेक्ट चेयरमैन रजत वर्मा ने सभी रक्त दाताओं को धन्यवाद दिया। शिविर में डा. नवीन सहित क्लब के अनेक सदस्य मौजूद थे।

मानसिक रूप से स्वस्थ रहना जरूरी: डा. प्रीति

- मानसिक स्वास्थ्य, समस्या व निवारण विषय पर जागरूकता व्याख्यान का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

अहीर महाविद्यालय में एनटीएफ यूनिट तथा आईसीसी के संयुक्त तत्वावधान में मानसिक स्वास्थ्य विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रचार्या डा. उर्मिला शर्मा ने किया। डा. शर्मा ने कहा कि वर्तमान समय की भाग दौड़ भरी जीवन शैली में अधिकतर लोग मानसिक तनाव का शिकार हो रहे हैं। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों व सदस्यों में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा मानसिक समस्याओं से निवारण के उपायों की जानकारी देना रहा। नागरिक अस्पताल से डा. प्रीति मनोचिकित्सा विभाग तथा निशा ने सभी को तनाव मुक्त रहने के टिप्स दिए। डा. प्रीति ने कहा कि आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में मानसिक रूप से स्वस्थ रहना अत्यंत आवश्यक है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

स्पर्धा

गर्ल्स कॉलेज बावल में खेलकूद प्रतियोगिता सम्पन्न

लॉन्ग जंप में नीतू को मिला बेस्ट एथलीट अवार्ड

रेवाड़ी। विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत करते अतिथि तथा अतिथियों व शिक्षकों के साथ खिलाड़ी। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बावल

राजकीय कन्या महाविद्यालय की सातवीं खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन पीएम श्री राजकीय स्कूल के खेल मैदान में किया गया। एसडीएम मनोज कुमार ने खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ किया और समापन समारोह में मुख्य अतिथि खरखड़ा कॉलेज के प्राचार्य डा. सत्येंद्र कुमार थे। प्राचार्य ने छात्राओं को नकद इनाम व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। प्रतियोगिता की डिस्कस थ्रो में अंकिता ने प्रथम, नीतू ने द्वितीय व नीतू कुमारी ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। हाई जंप में नेहा ने प्रथम, कोमल ने द्वितीय व नीतू तीसरे स्थान पर रही। 200 मीटर रेस में नेहा ने पहला, नीतू ने दूसरा व कोमल ने तीसरा स्थान हासिल किया। लॉन्ग जंप में नीतू ने प्रथम, कोमल ने द्वितीय व नीतू ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। 100 मीटर की दौड़ में नेहा ने प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि प्रिया ने दूसरा और कोमल ने तीसरा स्थान हासिल किया। 400 मीटर रेस में नीतू प्रथम, नेहा द्वितीय व प्रिया ने तीसरे स्थान पर हरी। 800 मीटर दौड़ में नीतू प्रथम, प्रिया द्वितीय व अंकिता ने तृतीय स्थान हासिल किया। जैवलिन थ्रो में अंकिता पहले, पायल दूसरे व नीतू तीसरे स्थान पर रही। शॉर्टपुट में अंकिता ने पहला व नीतू ने दूसरा स्थान हासिल किया। इस मौके पर मुख्यातिथि डा. सतेंद्र

प्राचार्य ने छात्राओं को नकद इनाम व प्रमाण पत्र देकर किया सम्मानित

कुमार ने कहा कि छात्राएं खेल को जीवन का हिस्सा जरूर बनाएं। उन्होंने कहा कि खेलों को खेल की भावना से खेलने की जरूरत है। खिलाड़ी और छात्र के जीवन में अनुशासन होना बहुत जरूरी है उन्होंने विजेताओं को बधाई दी और नीतू को बेस्ट एथलीट का पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर कन्या कॉलेज के प्राचार्य डा. नरेश कुमार यादव, प्रोफेसर दिलीप कुमार, प्रोफेसर राजेश बंसल, डा. ममता गुप्ता, चरण सिंह, देवेंद्र व हरिप्रकाश सहित सभी स्टाफ सदस्य मौजूद थे।

संस्था ने ऐतिहासिक छत्रियों के समूह का वॉल पेंटिंग से बढ़ाया सौन्दर्य

रेवाड़ी। अहीरवाल हेरिटेज संस्था की ओर से शनिवार को दिल्ली रोड स्थित रेजांगला युद्ध स्मारक के सामने स्थित ऐतिहासिक छत्रियों के समूह-राव पूरन सिंह बाग में वॉल पेंटिंग का कार्य किया गया। संस्था की अध्यक्ष प्रियंका यादव ने बताया कि यह छत्री समूह अहीरवाल हेरिटेज संस्था के प्रयासों से संरक्षित स्मारक घोषित हो चुका है। ऐतिहासिक छत्रियों के जीर्णोद्धार एवं संरक्षण के लिए हरियाणा पुरातत्व विभाग को पत्र भेजकर अनुरोध भी किया जा चुका है। वर्तमान में होली चाइल्ड स्कूल की ओर से नियमित एवं बेहतर साफ-सफाई की व्यवस्था की जा रही है। शनिवार को अहीरवाल हेरिटेज संस्था के सदस्यों व प्रसिद्ध चित्रकार अमन कुमार यादव के नेतृत्व में दीवार चित्रण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें दीवार पर मेहराबदार चित्रण कर परिसर की सुंदरता को और अधिक निखारा गया। कार्य में राकेश कुमार, आईजीयू एनएसएस स्वयंसेवक मयंक कुमार, अभिमन्यु, इंजीनियर सचिन, मुकेश सुल्तानिया, राहुल खोला, रविंदर, चंदर तथा शुभम गुप्ता सहित अन्य लोगों ने योगदान दिया।

दुनिया की भीड़ में क्यों बढ़ रहा है अकेलापन

देश-दुनिया की आबादी भले ही दिनों-दिन बढ़ रही हो, लेकिन इसके उलट लोगों का अकेलापन भी बढ़ रहा है। अकेलेपन की समस्या विश्वव्यापी है। भारत समेत अनेक देशों के लोग इस समस्या का सामना कर रहे हैं। अकेलेपन का हमारे स्वास्थ्य ही नहीं पूरे जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ता है। ऐसे में यह बहुत जरूरी है कि इसके कारणों को जाना जाए और इसे दूर करने का हर संभव प्रयास किया जाए।

कवर स्टोरी
एस. भाग्यम शर्मा

यह सही है कि दुनिया में आठ अरब से अधिक और हमारे अपने देश में 140 करोड़ से अधिक लोग रहते हैं। लेकिन दुख की घड़ी में शायद ही एक कंधा ऐसा मिले, जिस पर सिर रखकर हम रो सकें। सोशल मीडिया पर भले ही हमारे हजारों दोस्त होंगे, फॉलोअर्स होंगे, लेकिन असल जिंदगी में एक भी हमारे साथ नहीं होता। यानी आज लोगों की भीड़ में भी हर कोई खुद को अकेला महसूस कर रहा है।

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

अगर कोई शारीरिक बीमारी हो तो इसका असर दूसरों को नजर आता है। अकेलेपन का दुष्प्रभाव धूम्रपान और मोटापे की तरह शरीर पर नजर नहीं आता है। दरअसल, अकेलापन हमारे मन को बीमार बना देता है। अकेलापन एक दिन में 15 सिगरेट पीने से भी ज्यादा खतरनाक असर हमारे स्वास्थ्य पर डालता है। अकेलापन समय से पहले मृत्यु के खतरे को 25% तक बढ़ा देता है। अकेलेपन से ब्रेन स्ट्रोक और हृदय रोग का खतरा 30% तक बढ़ता है। यह डिमेंशिया के खतरे को 50% तक बढ़ा देता है, इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि समय रहते अकेलेपन की इस बीमारी को पहचान लें और यह जानें कि कहीं आप भी अकेलेपन के अंधेरे में खोते तो नहीं जा रहे हैं।

दुनिया भर में लोग हैं परेशान

वर्ष 2023 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अकेलेपन को एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट घोषित किया था। अकेलेपन को परिभाषित करते हुए डब्ल्यूएचओ ने कहा था कि अकेलापन व्यक्ति की अपनी भावनात्मक पीड़ा है, जो सामाजिक अलगाव और सार्थक रिश्तों की कमी से पैदा होती है। आज के दौर में अकेलापन दुनिया भर में एक गंभीर बीमारी का रूप ले चुका है। जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में कई लोग इस कदर अकेले हो चुके हैं कि अगर उनकी मृत्यु भी हो जाए तो कई-कई दिनों तक बाहरी दुनिया को उनकी मौत के बारे में पता ही नहीं चलता।

वहां से आई खबरों के अनुसार पिछले साल जापान में करीब 76,000 लोगों की उनके घर में अकेले रहते हुए मौत हुई। 4,000 लोग ऐसे थे, जिनके मरने के करीब एक महीने के बाद बाहर के लोगों को उनकी डेड बॉडीज मिलीं। जापान में तो अकेलेपन को दूर करने के लिए ज्यादा उम्र के लोग कई बार जान-बूझकर अपराध करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं, जिससे उन्हें सजा मिले और सजा के बाद वे जेल में दूसरे लोगों से मिलकर कुछ बातचीत कर सकें, उनका अकेलापन दूर हो, उनका मन लग सके।

बढ़ रहे हैं एकल परिवार

भारत में भी अकेलापन तेजी से फैल रहा है। इसकी मुख्य वजह है भारतीय समाज में टूटते संयुक्त परिवार। पहले के दौर में हमारे घर-परिवार में साथ रहने वाले अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी के साथ हम अपना सुख-दुख शेयर कर लिया करते थे। लेकिन अब वह दौर नहीं रहा। अब संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों ने ले ली है, जहां परिवार में पति-पत्नी ही रहते हैं। कई कपल तो बच्चे तक पैदा नहीं करना चाहते। बच्चे इसलिए नहीं पैदा करना चाहते, क्योंकि वे जानते हैं कि अगर बच्चे हुए तो उनकी देखभाल करने वाला परिवार में कोई नहीं है। महानगरों में 'ड्यूल इनकम-नो किड्स' का चलन बढ़ रहा है।

बढ़ती सामाजिक दूरी भी है वजह

पिछली सदी तक हम सब अनजान लोगों से भी बातचीत कर लिया करते थे। कोई रास्ता पूछता था तो बड़े मन से उसे रास्ता बताते, कई बार तो उन्हें उनके गंतव्य तक छोड़ कर आ जाते थे। बाजार जाते तो किराने की दुकान या सब्जी की दुकान पर दुकानदार से बातचीत कर लिया करते थे। अड़ोसी-पड़ोसी से उनका हाल-चाल पूछ लिया करते थे। चाय की दुकानों पर जाने-अंजाने लोग भी खूब बतियाते थे। लेकिन अब ऑनलाइन शॉपिंग के बढ़ते ट्रेंड से लोगों का बाजार आना-जाना भी बहुत कम हो गया है। सब इतने व्यस्त हो गए हैं कि किसी के पास समय ही नहीं रह गया है, एक-दूसरे की खबर लेने का।

बच्चे-युवा भी हो रहे प्रभावित

2021 के ग्लोबल सर्वे के मुताबिक, अकेलेपन से प्रभावित होने वाला तीसरा सबसे बड़ा देश भारत है। इस रिपोर्ट के अनुसार, भारत के शहरों में 43% लोग अकेलापन महसूस करते हैं। चिंताजनक बात यह है कि 13 से 15 साल की उम्र के 25 % बच्चे भी अकेलापन अनुभव कर रहे हैं। सोशल मीडिया की वजह से भी अकेलापन तेजी से बढ़ रहा है। कई स्टडीज में सामने आया है कि सोशल मीडिया की लत, युवाओं में अलगाव, अकेलापन और डिप्रेशन को बढ़ा रही है।

मशीनी हो रही भावनाएं

अकेलापन इसलिए भी बढ़ रहा है कि लोग एक-दूसरे के साथ अपनी भावनाएं साझा नहीं करते हैं। सोशल मीडिया में कोई इमोजी भेजकर खुद को दायित्वमुक्त समझ लेते हैं। आजकल लोगों को लगता है कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किसी की आंखों में आंख डालने की जरूरत नहीं है। किसी का हाथ थामने की जरूरत नहीं है। लोगों को लगता है कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए इमोजीज भेजना ही पर्याप्त है। यानी जब हम दुखी महसूस करते हैं तो हमारे साथ किसी की वास्तविक भावनाओं के स्थान पर ढेरों इमोजीज होते हैं।

अकेलापन दूर करने का करें प्रयास

हमें बचपन से ही सिर्फ यह सिखाया जाता है कि सफलता ही खुशी का सबसे बड़ा पैमाना है और जीवन में हर कीमत पर सफल होना सबसे जरूरी है। जो सफल है, वह खुश भी रह लेगा। हमें रिश्तों की अहमियत नहीं सिखाई जाती। सफलता और अधिक से अधिक पैसा, सुख-सुविधएं अर्जित करने की अंधी दौड़ में ज्यादातर लोग अपने रिश्तों को पीछे छोड़ देते हैं। जाहिर है, इससे जीवन में अकेलापन आएगा ही। अकेलापन किसी सफलता से या दौलत कमाने से या शानदार करियर से नहीं, अपनों के साथ होने से दूर होता है। इसलिए अगर आप भी अकेलापन महसूस करते हैं तो सोशल मीडिया पर ही नहीं अपने दोस्तों, रिश्तेदारों से मिलने उनके घर जाइए, उन्हें अपने घर बुलाइए। परिवार के साथ समय बिताइए। अंजान लोगों से भी बात करने में न हिचकिचाइए। यही नहीं अगर आपके परिवार में या आस-पास कोई ऐसा व्यक्ति है, जो अकेलापन महसूस कर रहा है तो उससे बात कीजिए। उसके अकेलेपन को दूर करने का प्रयास कीजिए। जरूरत पड़ने पर काउंसलर की मदद भी ले सकते हैं। ऐसा करने से उस व्यक्ति का अकेलापन तो दूर होगा ही, आपको भी आत्मीय खुशी, संतुष्टि मिलेगी। *

कई देशों में हो रही नई पहल

अकेलेपन की समस्या से निपटने के लिए अलग-अलग देशों में अब कई तरह की पहल की जा रही है। जैसे दक्षिण कोरिया में बुजुर्गों के लिए हैप्पी कैब्स चलाई जा रही हैं। यह एक कैब सर्विस है, जिसमें बुजुर्ग लोग अंजान लोगों के साथ बैठकर घूमने जा सकते हैं। उनसे बातचीत कर सकते हैं, अपने सुख-दुख साझा कर सकते हैं। इससे उन्हें अपना अकेलापन दूर करने में मदद मिलती है। इसी तरह अकेलेपन की समस्या के समाधान को तलाशने के लिए ब्रिटेन ने वर्ष 2018 में ही लोनलीनेस मिनिस्टर की नियुक्ति शुरू कर दी थी। एक अलग मंत्रालय, एक अलग मंत्री, जो सिर्फ यह देखेगा कि देश में लोगों के अकेलेपन को कैसे दूर किया जा सकता है? वहां अकेलेपन से जूझ रहे लोगों को काउंसिलिंग और मेडिकल सपोर्ट उपलब्ध कराए जाते हैं।

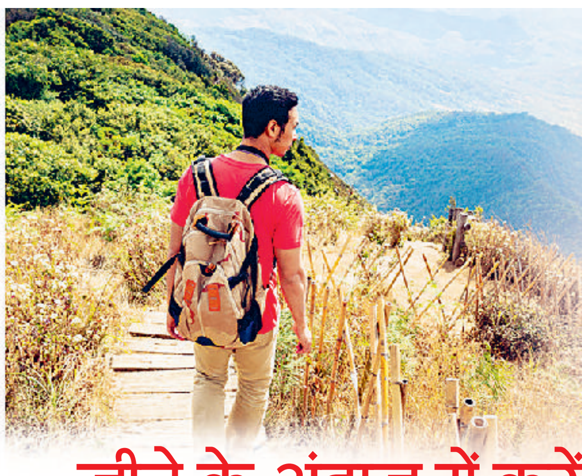

जिंदगी को खुशमिजाज बनाना हमारे ही हाथों में होता है। अगर हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में कुछ बदलाव कर लें, कुछ आदतों को शामिल कर लें तो हमारी जिंदगी खुशमिजाज बन सकती है। ऐसा किस तरह हो सकता है, जानिए।

जीने के अंदाज में करें बदलाव खुशमिजाज हो जाएगी जिंदगी

लाइफस्टाइल
शिखर चंद जैन

हमारा दिमाग ही हमारी सोच और नजरिए का स्रोत होता है। जब दिमाग अशांत या उद्वेलित रहता है तो हमें हर चीज में उथल-पुथल, नकारात्मकता और बुराई नजर आती है। लेकिन जब दिमाग शांत रहता है, हम खुशमिजाज रहते हैं तो हमें हर चीज सकारात्मक अच्छी और सही लगती है। खुशमिजाजी और सुकून के लिए कुछ बातें और आदतें अपनानी जरूरी हैं।

लोगों से बनाए अच्छे संबंध

भले ही सबको खुश रखना दुनिया का सबसे कठिन काम है लेकिन सबके साथ खुश रहना दुनिया का सबसे आसान काम है। हार्वर्ड स्टडी ऑफ एडल्ट डेवलपमेंट के डायरेक्टर और मनोचिकित्सक रॉबर्ट वालडिंगर का कहना है कि लोगों के साथ मजबूत और मधुर संबंध खुशी की प्रमुख वजह बन सकते हैं। ये लोग रोमांटिक पार्टनर, आपके दोस्त, बच्चे, सहकर्मी, पड़ोसी, रिश्तेदार या भाई-बहन कोई भी हो सकते हैं। भले ही हम सब स्वतंत्रता को खास मानते हों, लेकिन यह ना भूलें कि हम सब एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। जब हम अपने इर्द-गिर्द मौजूद लोगों के साथ अच्छे संपर्क रखते हैं तो मानसिक खुशी तो मिलती ही है, एक बड़ा सपोर्ट सिस्टम भी मिलता है, जो हमें हर तरह से सुकून देता है।

अजनबियों से करें बातचीत

ओटावा (कनाडा) की कार्लटन यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञानी जॉन जेलवेंसकी कहते हैं कि आपको एक्सट्रोवर्ट होना चाहिए। अंतर्मुखी, गंभीर और चुप्पी साध कर रहने वाले लोग उदास रहते हैं, जबकि सबसे आसानी से घुल-मिल जाने वाले और अजनबी लोगों से बातचीत करने की कला जानने वाले अकसर खुशमिजाज रहते हैं। साथ ही ऐसे लोग आसानी से अपना सोशल सर्किल और बिजनेस सर्किल भी बढ़ा लेते हैं, जिससे इन्हें सफलता मिलती है। जाहिर है, सफलता भी खुशी मिलने की एक महत्वपूर्ण वजह है।

पालतू के साथ समय बिताएं

वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए एक ताजा अध्ययन में पाया गया कि पालतू जानवर के साथ बिताया गया 10 मिनट का समय भी दिमाग को सुकून देने वाला होता है। इससे कार्टिसोल नामक स्ट्रेस हार्मोन का स्तर गिरता है। अमेरिकी नागरिकों द्वारा किए गए एक शोध में पाया गया कि सबसे ज्यादा सुकून देने वाले पालतू कुत्ते होते हैं।

कुदरत को निहारें

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के शोधकर्ताओं ने 90 स्टूडेंट्स पर किए गए शोध में पाया कि कुदरत को निहारना मन को सुकून देने वाला एहसास होता है। जब हम पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं को निहारते हैं तो हमारा ध्यान परेशानियों से हटकर पूरी तरह उन्हीं पर लग जाता है। इससे दिमाग को सुकून मिलता है।

फल-सब्जी ज्यादा खाएं

सोशल साइंस एंड मेडिसिन जर्नल में प्रकाशित ताजातरीन स्टडी रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रचुर मात्रा में फल और सब्जी खाने से खुशमिजाजी और सुकून मिलता है। इसलिए रोज कच्ची सब्जियों का सलाद और फल खाएं। सबसे बड़ी बात यह है कि अगर आप खान-पान, आराम और सोने का समय निर्धारित कर लेते हैं तो आपका हैप्पीनेस लेवल बढ़ जाता है। न्यूट्रीशन, एक्सरसाइज और रेस्ट, खुशी के मूल मंत्र हैं।

वाटर बॉडीज के पास जाएं

जर्नल आफ एनवॉयर्नमेंटल साइकोलॉजी में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि पानी के संग्रह स्थल नजदीक रहने से लोगों में पॉजिटिव इमोशंस का संचार होता है। स्विमिंग पूल, समुद्र या नदी के किनारे खड़े होकर पानी की हलचल को निहारना सुकून देता है। इससे स्ट्रेस लेवल भी कम होता है। *

इन पर भी करें अमल

जीवन के हर आयाम को बराबर समय देने की कोशिश करें, जैसे- परिवार, व्यापार, मित्र, जीवनसाथी, समाज आदि क्षेत्रों में सक्रिय रहें। हंसी-मजाक करें, लेकिन दूसरों का मजाक ना उड़ाएं। कई बार इससे स्थिति बिगड़ जाती है और तनाव का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा नए अनुभवों पर पैसा और समय खर्च करें। उन कार्यों को करे, जो आपने कभी नहीं किया और देखा। जैसे हॉर्स राइडिंग करना, घुड़दौड़ देखना, अंडरवाटर स्पोर्ट देखना या इसमें शामिल होना, थिएटर में जाकर नाटक देखना, किसी बर्फीले स्थान की यात्रा करना आदि।

व्यंग्य
अंशुमान खरे

गणित के मास्साब को पहली बार किसी सवाल पर नर्वस होते देखा। इसलिए मैं बार-बार उनसे इस प्रश्न को पूछता रहा। मास्साब को भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सा फार्मूला लगाएं कि दो लीटर दूध बराबर चालीस लीटर दूध हो जाए। कुछ तो गड़बड़ है।

प्रतिभा सम्मान

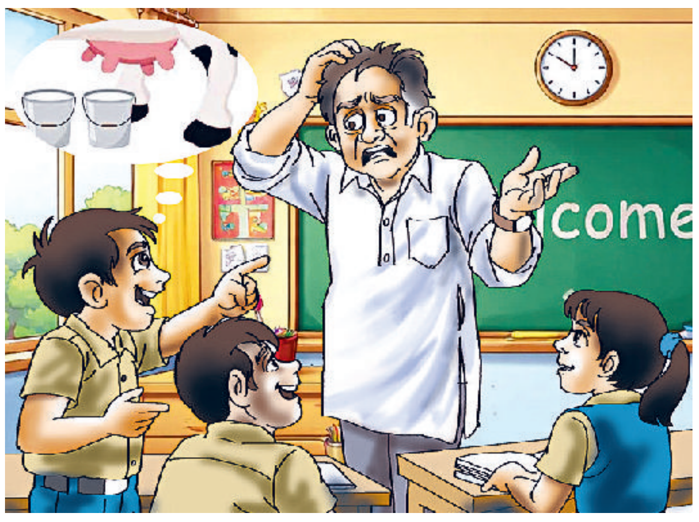

गणित में बचपन से ही हम बगैर होशियार होकर भी होशियार थे। न मालूम गणित के मास्साब कहां-कहां से सवाल लाते थे, लेकिन पिटते-पिटाते किसी तरह गणित में पास कर दिए जाते थे। घर वालों की तमन्ना डॉक्टर, इंजीनियर बनाने की थी। कक्षा में हमेशा अपराधी की तरह बैठे रहते थे। गणित के गुरु जी हमेशा हमें अंतरराष्ट्रीय गणितज्ञ बनाने का मजाक करते रहते थे। पर हमें कुछ भी समझ नहीं आता। हमारे गणित के गुरु जी फिरकी लेते थे कि मुझे भगवान भी नहीं समझा सकते। गणित की क्लास हमारे लिए आफत से कम नहीं थी। मास्साब के सवाल भी माशाअल्लाह अद्भुत होते थे। एक औरत एक काम को चार घंटे में पूरा कर लेती है तो बताओ उसी काम को आठ औरतें कितने समय में पूरा करेंगी? मैं कहता, 'आठ औरतें काम तो पूरा कर नहीं पाएंगी। हां, रायता जरूर फैला देंगी।'

सवाल से सवाल निकालने की कला में हमारे मास्साब का कोई सानी नहीं था। कपड़े पर अटक गए तो उसी से जुड़े सवाल पर सवाल पूछने लगते, 'बताओ बच्चो, अगर एक साड़ी धूप में एक घंटे में सूखती है तो चार साड़ियां सूखने में कितना समय लेंगी?'

बहुत सरल सवाल सोचकर मैं हाथ उठाकर बोल पड़ा, 'वेरी सिंपल, चार घंटे।' मास्साब जवाब सुनकर आपे से बाहर हो गए। मैं समझ नहीं पा रहा था, मास्साब को सीधा-सा गुणा करना नहीं आता क्या?

मैंने हिम्मत करके एक सवाल पूछ लिया, 'गुरु जी, अगर एक गांव में एक गाय है और वह दो लीटर दूध देती है तो बताइए गांव वाले चालीस-चालीस लीटर दूध बाहर कैसे सप्लाई करते हैं?' मास्साब का माथा ठनका और तमतमा कर क्लास से बाहर चले गए। मेरा सवाल अनुत्तरित रह गया। मेरे सवाल पर क्लास में चर्चा होने लगी। सब हैरान। प्रश्न तो उचित है। मास्साब नाराज क्यों हो गए? गणित के मास्साब का वैसे भी स्कूल में काफी जलवा था। प्रधानाचार्य से लेकर सभी अध्यापक और छात्र उनको आदर की दृष्टि से देखते थे। दूध की सप्लाई का सवाल गणित के मास्साब के गले की फांस बन गया। कुछ दोस्तों ने कहा, 'पानी मिला लेते होंगे।'

पर इतना पानी मिलाकर दूध रह ही नहीं पाएगा। सब पानी-पानी हो जाएगा।

मास्साब इस बात को पता लगाने में जी-जान से जुट गए कि इस प्रश्न को किसके इशारे पर उनसे पूछा गया है। यह किस अध्यापक की साजिश है, पता लगाना जरूरी है। गणित के मास्साब को पहली बार किसी सवाल पर नर्वस होते देखा। इसलिए मैं बार-बार उनसे इस प्रश्न को पूछता रहा। मास्साब को भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सा फार्मूला लगाएं कि दो लीटर दूध बराबर चालीस लीटर दूध हो जाए। कुछ तो गड़बड़ है। इस तरह के सवाल किसी किताब में नहीं होते हैं। मास्साब मेरे प्रश्न में उलझते जा रहे थे। मैं उनकी तरफ आशाभरी दृष्टि से टकटकी लगाकर धैर्य से देखता रहता था।

मेरे प्रश्न को दूर-दूर तक पहुंचाया गया। कहीं से समस्या का समाधान निकले। प्रधानाचार्य जी ने ऐसा गांव पहचाना, जहां के लोग दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध बनाने में सफल हुए हैं। उन्होंने गांव के लोगों को सम्मानित करने की योजना बनाई। गांव के प्रधान गांव को सम्मानित करने के नाम से उत्साहित दिखे। ऐसे प्रतिभाशाली लोगों की ओर सबका ध्यान खींचने के लिए मुझे भी मालाओं से लाद दिया गया। क्षेत्र के विधायक, सांसद, सभी ने गांव को सम्मानित करने में रुचि दिखाई। श्वेत क्रांति के लिए पूरे गांव के लोगों को बधाई देने वालों का तांता लग गया। शासन, प्रशासन ने भी गांव को सम्मानित करने के सुर में सुर मिला दिया। जिलाधिकारी से लेकर सारे कर्मचारी मुस्तैदी से सम्मान समारोह की तैयारी में जुट गए हैं। लेकिन मैं और गणित के मास्साब प्रश्न अनुत्तरित रहने से चिंतित हैं। हम दोनों शून्य में उत्तर खोजने की कोशिश कर रहे हैं। दुग्ध क्रांति की गुत्थी उलझती जा रही है। सुना है कि गांव के सम्मान समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री भी आएंगे और ऐसी प्रतिभाओं को सम्मानित करेंगे, जो दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध सप्लाई करने का 'हुनर' जानते हैं। *

लघुकथा / निशा भास्कर

छांव से दूर

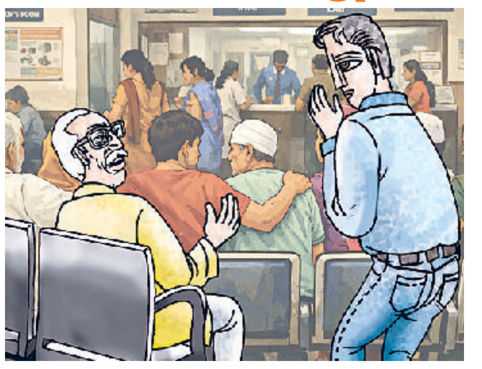

अस्पताल जाते समय सड़क की भीड़ और अब वहां सैकड़ो की संख्या में कतारबद्ध खड़े लोगों को देखकर बाबूजी बोले, 'महानगरों के सड़कों पर दौड़ती-हांफते वाहनों के साथ, यहां का आम जीवन थरथराते हुए गुजरता है।'

'राजधानी में अच्छी सुविधा मिलेगी, यह सोचकर सभी राज्यों से लोग आकर यहां बसना चाहते हैं और बसते भी हैं, इसलिए भीड़ तो होगी ही।' बाबूजी की ओर देखकर मयंक धीरे से बोला। बाबूजी बड़ी मुश्किल से इलाज के लिए अपना घर और गांव छोड़कर अपने बेटे मयंक के पास इस महानगर में आए थे। कहीं बाबूजी गांव वापस जाने की जिद्द न करने लग जाएं, यह ख्याल आते ही मयंक बोला, 'बाबूजी एक बार आपका अच्छी तरह से इलाज हो जाए बस और हमें क्या चाहिए!' 'अरे बेटा! मुझे लगता है यहां तो हम और भी बीमार हो जाएंगे। स्वस्थ क्या खाक होंगे?' कहकर वे तेज-तेज खांसने लगे। उनकी आंखें भी लाल हो गईं। मयंक ने घबराकर इधर-उधर देखा। अस्पताल का प्रतीक्षालय पूरी तरह से भरा हुआ था। एक भी सीट खाली नहीं थी, जहां बाबूजी को वह बैठा सके। एक व्यक्ति जो उसी की तरह दिख रहा था। मयंक ने उसे आग्रहपूर्ण नजरों से देखा। उस व्यक्ति ने खड़े होकर बाबूजी को बिठाने का इशारा किया। मयंक ने बाबूजी को बिठाया और दोनों हाथ जोड़कर उस व्यक्ति का आभार व्यक्त किया और बाबूजी से बोला, 'मैं अभी आया।' फिर वह शीघ्रता से अस्पताल से बाहर निकल गया। थोड़ी ही देर में पानी की बोतल लेकर आया और बाबूजी को पानी पिलाकर बोला, 'आप चिंता न करें, हम जिस डॉक्टर से दिखाने के लिए आए हैं, उनका बहुत नाम है। उनके इलाज से कितना भी पुराना रोग, ठीक हो जाता है।' बाबूजी, बेटे की बात सुनकर बोले, 'अरे! यह तो बुढ़ापे का रोग है। खांसना-खंखारना तो लक्षण है, बुढ़ापे का। लेकिन बेटा, मेरी एक बात ध्यान से सुन, यह शहर बड़ा है, डॉक्टर बड़ा है पर हम तो बड़े लोग नहीं हैं न! बड़ा शहर और इसकी सुविधाएं बड़े लोगों के लिए होती हैं। हम इनके फोटो देखकर अपने से झूठ बोलते हैं कि मैं भी इसका हिस्सा हूं। पर हमारी इतनी औकात नहीं है।' मयंक की आंखें गीली हो गईं। वह बोला, 'सच कह रहे हैं बाबूजी! बीस साल की नौकरी में क्या ही कर लिया मैंने? आज तक बीवी बच्चों को इस शहर में एक छत भी न दे सका।' बेटे को इस तरह उदास देखकर बाबूजी उसके सिर पर हाथ रखकर बोले, 'बेटा हम अपने गांव चलेंगे। वहीं के अंग्रेजी स्कूल में मेरी पोती पढ़ेगी और मैं अपने बड़े से आंगन में नीम की छांव तले बैठकर उसके साथ खेलूंगा और' तभी नर्स ने टोकन नंबर बहत्तर रामजस को आवाज दी। मयंक बाबूजी का हाथ थाम कर बोला, 'चलिए बाबूजी, अपना नंबर आ गया।' *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

अलग मिजाज की कहानियां

वरिष्ठ कथाकार हबीब कैफी की चुनी हुई सत्रह कहानियां 'तमन्ना खानम' पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। करीब साढ़े पांच दशक के कालखंड में लिखी गई ये कहानियां, हमें समाज के अलग-अलग तबके से ताल्लुक रखने वाली स्त्रियों की जिंदगी से रूबरू कराती हैं। कहीं पुरुषत्व के दंभ से दमित लेकिन फिर भी उसके साथ रहने को विवश भंवरी नजर आती है (औरत), तो कहीं गणिकाओं के जीवन की त्रासदी भोगती मरजीना की कराह सुनाई पड़ती है (मरजीना)। 'तमन्ना खानम' कहानी में उच्च वर्ग की महिला तमन्ना को अपनी जिंदगी की पेचीदगियों को अपने अंदाज में सुलझाते देखा जा सकता है। बहुत अलग मिजाज की ये कहानियां, कहीं-कहीं उर्दू के मशहूर कथाकार मंटो की याद दिलाती हैं। इन कहानियों में भाषा की रवानगी भी देखने लायक है। *

पुस्तक: तमन्ना खानम (कहानी संग्रह), **लेखक:** हबीब कैफी, **मूल्य:** 299 रुपए, **प्रकाशक:** कौटिल्य बुक्स, नई दिल्ली

जरा सोचिए, प्रकृति और जीवन में रंग और सुगंध न हों तो यह दुनिया कितनी नीरस हो जाएगी। ये फूल ही तो हैं, जो हमारी दुनिया को रंगीन बनाते हैं, खुशबू से महकाते हैं। वासंती मौसम में तो बाग-बगीचों में फूलों की बहार ही आ जाती है। ऐसे में आइए, बात करें फूलों की...

वासंती मौसम में बात फूलों की

प्रकृति
शिखर चंद जैन

हर ऋतु में प्रकृति हमारे लिए कई बेशकीमती सौगातें लेकर आती है। प्रकृति की इन सौगातों में कुछ बेहद खूबसूरत फूल भी शामिल हैं। फूलों की यह मनमोहक दुनिया, हमें एहसास कराती है कि जीवन में रंग और खुशबू का कितना महत्व है। हर फूल अपनी जगह खास है, चाहे वह सड़क किनारे खिला छोटा-सा अनाम फूल हो या किसी बगीचे में खिला राजसी गुलाब। अगली बार जब आप किसी फूल को देखें, तो रुककर उसकी मोहक बनावट, उसकी सुगंध के बारे में जरूर सोचें। इन्हें जितना गौर से, प्यार से देखेंगे आपको इनसे उतना ही ज्यादा लगाव हो जाएगा।

संभालें नाजुक फूलों को: फूल हमारी धरती को खूबसूरती तो प्रदान करते ही हैं। इसके अलावा कई कीट-पतंगों को अपना रस, कई औषधीय लाभ और हमें खुशी का अहसास भी कराते हैं। ये मधुमक्खियों और तितलियों को आकर्षित करते हैं, जिससे परागण होता है। इससे पौधे बीज बना पाते हैं और नए पौधे उगते हैं। इस तरह फूल हमारे पर्यावरण का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इसलिए हमारा भी फर्ज है कि हम उनकी रक्षा करें। ज्यादा कुछ नहीं तो इतना तो कर ही सकते हैं कि हम बिना कारण फूलों को न तोड़ें। जब हम फूल तोड़ते हैं, तो वह पर्याप्त मात्रा में बीज नहीं बना पाते और नए पौधे नहीं उग पाते हैं। फूलों की हिफाजत की शुरुआत अपने घर से करें। घर के गमलों में लगे फूलों वाले पौधों को नियमित तौर पर पानी दें और उन्हें कुछ समय के लिए सूरज की रोशनी में भी रखें। तितलियों, मधुमक्खियों और भौंरों को फूलों पर बैठकर उनका रस चूसने दें। उन्हें भगाने का प्रयास न करें। न भूलें कि इससे उन कीटों को भोजन तो मिलता ही है, उस फूल वाले पौधे का परागण भी होता है। प्रकृति का सम्मान करें और अधिक से अधिक फूलों के पौधे लगाएं ताकि हमारे आस-पास हमेशा फूल महकते रहें।

बात भी करते हैं फूल: फूलों की मूल भाषा सुगंध होती है। ये हम मनुष्यों से अपनी मादक महक के माध्यम से बतियाते हैं। खुशबू से वे अपनी उपस्थिति का एहसास कराते हैं। हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। सभी फूल अपनी अलग-अलग खुशबू फैलाते हैं। कुछ मधुमक्खियों और तितलियों को बुलाने के लिए और कुछ कीड़े-मकोड़ों को दूर भगाने के लिए। वैसे फूलों के पौधों समेत सभी पौधे, अपनी जड़ों और फंगस के नेटवर्क के जरिए भी एक-दूसरे से जुड़े होते हैं और पोषक तत्वों या पानी की कमी जैसी जानकारी साझा करते हैं। साथ ही हवा में रसायन छोड़कर भी वे संवाद करते हैं। जब किसी पौधे पर हानिकारक कीट हमला करते हैं तो वह हवा में कुछ रसायन छोड़ते हैं, जिसे आस-पास के दूसरे पौधे महसूस कर लेते हैं और अपनी सुरक्षा के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रसिद्ध भारतीय वनस्पति विज्ञानी सर जगदीश चंद्र बोस ने बताया था कि पौधे इलेक्ट्रिक सिग्नल्स के जरिए भी संवाद करते हैं।

हमें इसलिए भाते हैं फूल: फूल हमें इसलिए अच्छे लगते हैं, क्योंकि उनके सुंदर रंग, मनमोहक सुगंध और आकर्षक बनावट हमारे दिमाग में खुशी के हार्मोन (डोपामाइन और सेरोटोनिन) पैदा करते हैं, जिससे हमें शांति और ताजगी महसूस होती है। फूल प्रकृति की सुंदरता, जीवन की सरसता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माने जाते हैं। इतना ही नहीं, ये दवा के रूप में भी महत्वपूर्ण होते हैं। पौराणिक काल में किसी स्थान पर फूलों की मौजूदगी इंसानों को यह संकेत देती थी कि आस-पास पानी, पोषक तत्व और भोजन (फल) उपलब्ध हैं। यही वजह है कि मानव सभ्यता के विकास से ही फूलों से हमारा गहरा जुड़ाव रहा है। फूलों के चटक, खूबसूरत रंग, इनकी मुलायमियत और सिमेट्रिकल बनावट आंखों को बहुत आकर्षित करती हैं।

कम नहीं सांस्कृतिक-प्राकृतिक महत्व: फूलों का सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक महत्व भी है। ये खुशी, प्रेम, सम्मान और उत्सव के प्रतीक माने जाते हैं, इसलिए जन्मदिन, शादियों और अन्य शुभ अवसरों पर फूलों को बुके, माला, गुच्छ के रूप में भेंट किया जाता है। वास्तु और ज्योतिष के अनुसार, फूल घर में सकारात्मक ऊर्जा लाते हैं और नकारात्मकता को दूर करते हैं, जिससे खुशहाली आती है। *

आर्थिक लाभ भी कराते हैं फूल

फूलों को पसंद किए जाने की एक वजह यह भी है कि ये लाखों लोगों को आर्थिक लाभ भी कराते हैं। कोई फूल उगा कर, कोई इन्हें बेच कर, कोई सजा कर, कोई निर्यात करके और कोई इनसे सजावटी सामान, मालाएं और बुके आदि बनाकर धनार्जन करता है। भारत में फूलों का कारोबार तेजी से बढ़ रहा है, जिसका बाजार 2022 में लगभग 23,000 करोड़ रुपए का था और 2028 तक 46,700 करोड़ रुपए तक पहुंचने की उम्मीद है। बेंगलुरु, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल प्रमुख पुष्प उत्पादक राज्य हैं। गुलाब, गेंदा, रजनीगंधा और ऑर्किड जैसे फूलों की मांग दुनिया भर में सबसे अधिक है। भारत के फूल संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, नाइजीरिया सहित कई देशों में भी भेजे जाते हैं।

सफलता के लिए जानना है जरूरी

आप क्या नहीं करना चाहते

करियर फील्ड कोई भी हो, उसमें सफल होने के लिए आपका फोकस्ड होना सबसे जरूरी है। फोकस्ड होने के लिए यह जानना जितना जरूरी है कि आपको क्या-क्या करना है, उतना ही जरूरी यह भी होता है कि क्या-क्या नहीं करना चाहते हैं?

सेल्फ मोटिवेशन
कीर्तिशेखर

कई बार जीवन में 'हां' से ज्यादा जरूरी और ताकतवर होता है, 'नहीं'। विशेषकर करियर में सफल होने के लिए अगर शुरू से ही हमें यह पता हो कि हम क्या नहीं बनना चाहते, तो बहुत फायदा होता है।

क्या कहती हैं स्टडीज: करियर में सक्सेस के संबंध में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में हुए एक शोध के मुताबिक 60 फीसदी से ज्यादा लोग ऐसे कामों में लगे होते हैं, जिन्हें वो करना पसंद नहीं करते, मगर जोखिम न उठाने के चलते वो ऐसे काम जीवनभर करते रहते हैं। इसके साथ ही एक दूसरा जबर्दस्त शोध इस विषय पर हुआ है कि दुनिया में जितने सफल लोग हैं, उसमें 90 फीसदी से ज्यादा ऐसे हैं, जो उस काम को कर रहे हैं, जिसे वह करना चाहते थे। जी हां, जब हम कोई ऐसा काम करते हैं, जो हमारा मनपसंद होता है, उसमें सफल होने के चांस 10-20 फीसदी नहीं पूरे 100 फीसदी ज्यादा होते हैं। इसलिए सफलता की असली नींव क्या करना है, से नहीं बल्कि क्या नहीं करना है, से पड़ती है। जिस दिन हम यह समझ लेते हैं कि हम जीवन में क्या नहीं करना चाहते, उसी समय हमारे करने वाले कामों की लिस्ट बिल्कुल साफ और सफलता की उम्मीद बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है।

'नहीं' क्यों जरूरी है: हम अकसर यह मानकर चलते हैं कि हां कहना सकारात्मक होता है और नहीं कहना नकारात्मक। लेकिन बात अगर स्पष्ट रूप से जिंदगी में करियर की दिशा चुनने की हो तो न कहना ज्यादा सकारात्मक होता है बजाय हर काम के लिए हां कर देने के। 'हां' कहना जितना आसान होता है, उसका नुकसान उतना ही बड़ा होता है। इसलिए जो काम न करना चाहते हों, उसे करने के आसान विकल्प मिलें तो बेहतर है 'नहीं' करना सीखें।

सफलता का पहला स्टेप: सफल लोग पहले यह तय करते हैं कि उन्हें क्या नहीं करना। इसलिए वे कुछ बातों को अमल में लाते ही हैं।

- हर काम और हर मौके पर कूद नहीं पड़ते।
- हर चमकदार विकल्प में नहीं फंसते।
- वे हर सलाह को आदेश नहीं मानते।
- सुनते सबकी हैं, लेकिन करते हैं, जो उनके मन में चल रहा होता है। यानी जो उन्हें सही लगता है।
- ऐसे लोग हर अपेक्षा को अपने सिर पर नहीं ढोते हैं।

दरअसल, सफलता का दर्शन दुनिया में कई नामों से जाना जाता है जैसे- फोकस, प्राथमिकता, सीमाएं और आत्मनियंत्रण। लेकिन सबका मूल एक ही है। आखिर मैं क्या करना चाहता हूं और क्या नहीं करना चाहता हूं?

इसलिए नहीं कहने से डरते हैं लोग: नहीं कहने से ज्यादातर लोग इसलिए डरते हैं, क्योंकि न कहना गैरसामाजिक माना जाता है। न कहने में एक किस्म की बगावत, विरोध होता है। इसलिए लोग न कहने से बचते हैं। लेकिन बचना वास्तव में 'बचना' नहीं होता। अगर न कहने से आप बचते हैं तो आखिरकार उसी न में फंस भी जाते हैं। इसलिए जब करियर के बारे में गंभीरता से सोचें तो अपनी सबसे पहली और जरूरी लिस्ट यह बनाएं कि आप क्या-क्या नहीं करना चाहते हैं? अगर समय रहते आपमें यह स्पष्टता नहीं आई तो एक दिन आपको मजबूर होकर 'नहीं' खुद सिखा देगी। मसलन, मानसिक तनाव के जरिए, असफलता के चलते या पछतावे के रूप में। क्योंकि जो काम आप नहीं करना चाहते और फिर भी करते हैं, तो कीमत तो चुकानी ही पड़ती है। इसलिए बाद में कोई कीमत चुकाने से बेहतर पहले ही चुका लें, क्योंकि शुरुआत में यह सबसे छोटी होती है।

सफलता दिलाएंगे इन्हें 'नहीं' कहना: जिस दिन आप यह तय कर लेते हैं कि मैं अपनी तुलना 'नहीं' करूंगा, उसी दिन आप अपनी प्रतिभा से असफल होने से बच जाते हैं। तुलना सफलता से दूर करती है। सोशल मीडिया के दौर में तो तुलना एक धीमा जहर बन चुकी है।

खुद को हर जगह साबित 'नहीं' करने का निर्णय भी कारगर है। दरअसल, हर जगह अपनी काबिलियत दिखाने की कोई जरूरत नहीं होती, क्योंकि सभी जगहें आपकी सफलता नहीं तय करती हैं। इसलिए अपनी काबिलियत वहीं दिखाइए, जहां वाकई उसकी जरूरत है। लोग क्या कहेंगे, इस डर से अनचाहा फैसला 'नहीं' करना भी जरूरी है। जिस दिन आप फैसले लेने में 'लोग क्या कहेंगे' को माइनस कर लेते हैं तो आपके सारे फैसले सही होने लगते हैं। आजकल एक धारणा बन चुकी है, जो व्यस्त है, वही सफल है। जिस दिन आप इस भेड़चाल को मानने से इनकार कर देंगे, उस दिन से सफलता आपके कदम चूमेगी। रिश्ता भी वही स्वस्थ होता है, जिसमें सम्मान हो और जिसे याद करते हुए भी खुशी हो। जिस रिश्ते को याद करके खुशी न हो, उसे तोड़ना ही बेहतर होता है। *

निवेश, बचत और फाइनेंस से संबंधित अन्य कई पहलुओं को लेकर अकसर लोग असमंजस या भ्रम की स्थिति में रहते हैं। एक सुरक्षित वित्तीय भविष्य के लिए जरूरी है कि आप वित्त से संबंधित इन मिथ और फैक्ट को अच्छी तरह जानें-समझें।

समृद्ध जीवन के लिए समझें

फाइनेंस से जुड़े मिथ-फैक्ट

सजेशन
अंजू जैन

हमारे मन में पैसों को लेकर पारंपरिक तौर पर कई ऐसी धारणाएं बैठा दी गई हैं, जो भ्रम होती हैं। घर की फाइनेंसियल कंडीशन अच्छी रखने के लिए ऐसे भ्रमों और उनसे जुड़े सच के बारे में जानना जरूरी है। इससे आप सुखी और समृद्ध रहेंगे।

मिथ: अगर आपकी इनकम ज्यादा है तो आप अमीर हो ही जाएंगे।

फैक्ट: अमीर होना सिर्फ इस बात पर निर्भर नहीं करता कि आप कितना कमाते हैं, बल्कि इस पर भी निर्भर करता है कि आप कितना बचाते हैं और कितनी समझदारी से निवेश करते हैं। मार्गन हाउसेल अपनी किताब 'द साइकोलॉजी ऑफ मनी' में लिखते हैं कि असली धन वह है, जो लोगों को सामने दिखाई नहीं देता बल्कि जिसे आपने अच्छी जगह निवेश कर रखा है। जैसे जमीन-जायदाद, शेयर, सोना, चांदी, एफडी, म्यूचुअल फंड आदि।

मिथ: घर खरीदना हमेशा ही एक बेहतरीन संपत्ति मानी जाती है।

फैक्ट: नहीं, अगर घर का मेंटेनेंस बहुत ज्यादा है, आपके कार्यस्थल से दूर है, डेली शॉपिंग की सुविधा नजदीक नहीं है या इसकी रीसेल वैल्यू बढ़ने वाली नहीं है तो आपके लिए यह नुकसानदायक ही होगा। रॉबर्ट कियासाकी अपनी पुस्तक 'रिच डैड-पुअर डैड' में बताते हैं कि अगर आपका घर आपकी जेब से विभिन्न मदों में पैसा निकाल रहा है तो वह एक लायबिलिटी है, एसेट नहीं। एसेट वह है, जो आपकी जेब में पैसा डाले।

मिथ: निवेश करने के लिए बहुत सारे पैसों की जरूरत होती है।

फैक्ट: निवेश के लिए इसकी आदत और खर्च पर नियंत्रण जरूरी होता है। पुस्तक 'द रिचेस्ट मैन इन बेबीलोन' के अनुसार, अपनी कमाई का कम से कम 10 प्रतिशत हिस्सा खुद के लिए बचाकर निवेश की शुरुआत करना ही सबसे बड़ी रणनीति है। 'कंपाउंडिंग' की शक्ति कम पैसों से भी बड़ा फंड बना सकती है।

मिथ: कर्ज हमेशा नुकसानदायक ही होता है।

फैक्ट: विशेषज्ञ 'अच्छे कर्ज' और 'बुरे कर्ज' में फर्क बताते हैं। अगर कर्ज का उपयोग ऐसी चीज खरीदने के लिए किया जाए, जिसकी वैल्यू बढ़े या जो आय पैदा करे (जैसे बिजनेस लोन), तो वह अच्छा कर्ज है। लेकिन लग्जरी, झूठे दिखावे और फिजूल चीजों के लिए कर्ज लेना गलत है।

मिथ: ज्यादा जोखिम मतलब ज्यादा मुनाफा।

फैक्ट: बिल्कुल नहीं। सफल निवेशक हमेशा जोखिम कम करने पर ध्यान देते हैं। बेंजामिन ग्राहम की पुस्तक 'द इंटेलिजेंट इंवेस्टर' सिखाती है कि अपनी पूंजी की सुरक्षा का ख्याल रखना और सोच-समझकर निवेश का विविधीकरण करना ही असली समझदारी है।

मिथ: रिटायरमेंट का मतलब 'काम बंद और पूरा आराम करना' है।

फैक्ट: हमेशा याद रखें कि खाली दिमाग शैतान का घर होता है। बिना किसी काम के शरीर और दिमाग को जंग लग जाती है। इससे दिमाग परेशानियों और बीमारियों में उलझ जाता है। बेहतर होगा कि रिटायर होने के बाद पसंदीदा काम करें और उससे चार पैसा कमाने की सोचें। टिम फेरिस की पुस्तक 'द 4-आवर वर्कवीक' के अनुसार, वित्तीय स्वतंत्रता का मतलब काम छोड़ना नहीं, बल्कि पसंद का काम करने की आजादी होना है।

मिथ: बजट बनाना खुद पर पाबंदी लगाना है।

फैक्ट: बजट आपको यह नहीं बताता कि आप क्या नहीं कर सकते, बल्कि यह तय करता है कि आपका पैसा कहां जाना चाहिए? यह आपको फिजूलखर्ची से बचाकर आर्थिक आजादी की ओर ले जाता है।

मिथ: अमीर लोग अकसर कंजूस होते हैं।

फैक्ट: अमीर लोग समझदार होते हैं, सोच-समझकर खर्च करते हैं और अपनी इसी आदत के कारण वे अमीर बनते हैं। थॉमस जे. स्टेनली की पुस्तक 'द मिलिनेयर नेक्स्ट डोर' के अनुसार, ज्यादातर करोड़पति साधारण जीवन जीते हैं। वे 'दिखावे' पर नहीं बल्कि 'वित्तीय स्वतंत्रता' पर खर्च करते हैं।

मिथ: पैसा ही सारी बुराइयों की जड़ है।

फैक्ट: यह एक बहुत पुराना भ्रम है। असल में पैसा नहीं 'पैसे का लालच' समस्याओं की जड़ है। पैसा अपने आप में केवल एक जरिया यानी टूल है, जो आपके पास मौजूद संसाधनों को बढ़ाने की क्षमता रखता है।

मिथ: निवेश के लिए मार्केट को 'टाइम' करना (सही समय का इंतजार) जरूरी है।

फैक्ट: 'टाइम इन द मार्केट' (बाजार में समय बिताना) 'टाइमिंग द मार्केट' (बाजार का सही समय चुनना) से कहीं ज्यादा शक्तिशाली है। नियमित रूप से निवेश करना (जैसे एस आई पी के जरिए) और धैर्य रखना ही धन सृजन का सबसे विश्वसनीय तरीका है। शेयर बाजार में 'कब' निवेश करना है, इससे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि आप 'कितने समय' तक निवेशित रहते हैं, क्योंकि निरंतरता ही वेल्थ क्रिएशन की असली कुंजी है। बाजार में अधिक समय बिताने से लंबी अवधि में चक्रवृद्धि ब्याज और धैर्य के कारण बेहतर रिटर्न मिलता है, जो पोर्टफोलियो को बढ़ने का मौका देता है। *

(वित्तीय सलाहकार प्रदीप अग्रवाल और चार्टर्ड अकाउंटेंट शुभम तोदी से बातचीत पर आधारित)

बॉलीवुड ट्रेंड
डी. जे. नंदन

'हम दोनों' का गीत 'अभी न जाओ..'

'वो कौन थी' का गीत 'लग जा गले..'

अब क्यों नहीं बन पाते

रूहानी सुकून देते गीत

पुराने फिल्मी गीतों को आज भी सुनें, तो ऐसा लगता है मानो किसी ने कानों में मिश्री घोल दी हो। ठहराव और सकून से भरे ये गीत सीधे रूह में उतरते हैं। आज ऐसे गीत कम ही बनते हैं। बॉलीवुड सॉन्ग्स के इस बदले हुए ट्रेंड पर एक नजर।

कई फिल्मी गीत ऐसे होते हैं, जो सीधे दिल में उतरते हैं। बीते दौर के सदाबहार गीतों पर यह बात पूरी तरह लागू होती है। ये गाने सुनने के दौरान ही नहीं बल्कि उसके बाद भी देर तक दिलो-दिमाग में गूंजते रहते हैं। अब ऐसे गीत कम ही बनते हैं। आज ऐसे गीत कम इसलिए नहीं हैं कि प्रतिभा खत्म हो गई है, बल्कि इसलिए कि दिल तक पहुंचने का रास्ता बदल गया है और यह छोटा भी कर दिया गया है। अगर हम आज के बॉलीवुड गीत-संगीत को ध्यान से सुनें, तो साफ पता चलता है कि मंद्र सप्तक यानी नीचे सुर में गाए गए, ठहरे हुए, भावप्रधान और गहराई वाले गीत अब अपवाद बनते जा रहे हैं।

सदाबहार गीतों का दौर: बीते दौर के गीतों को सुनते हुए एक सुकून, एक ठहराव-सा महसूस होता है। मसलन, फिल्म 'वो कौन थी' के इस गीत पर गौर करें, 'लग जा गले...'(स्वर-लता मंगेशकर, संगीत-मदन मोहन) यह गीत सुकून की पराकाष्ठा पर पहुंचाता है। आवाज में न कोई जल्दबाजी है, न दिखावा। बस एक अंतिम आग्रह, जो सरगोशी में भी अमर हो गया। इसी

'अमर प्रेम' का गीत 'चिंगारी कोई भड़के'

तरह फिल्म 'अमर प्रेम' का 'चिंगारी कोई भड़के...'(स्वर-किशोर कुमार, संगीत-आर. डी. बर्मन), किशोर कुमार का यह गीत यह साबित करता है कि मध्यम और नीचा सुर कमजोरी नहीं, गीत की ताकत भी होती है। 'अभी न जाओ छोड़कर...'(फिल्म 'हम दोनों', स्वर-मोहम्मद रफी और आशा भोसले, संगीत-जयदेव) गीत को सुनें तो इस गीत में संवाद है, आग्रह है और प्रेम का सभ्य ठहराव है। सुर इतने संयमित हैं कि आज भी इस गीत को सुनते हुए लोग इसमें खो जाते हैं। ऐसे ही 'कहीं दूर जब दिन ढल जाए...' (फिल्म 'आनंद', स्वर-मुकेश, संगीत- सलिल चौधरी) गीत दिन और जीवन- दोनों के ढलने का संगीतात्मक रूपक है। और इसी तरह 'वो शाम कुछ अजीब थी..' (फिल्म 'खामोशी', स्वर-किशोर कुमार, संगीत- हेमंत कुमार) गीत में सुर सिर्फ चलते ही नहीं, ठहरते भी हैं। यही ठहराव इस गीत की आत्मा है।

क्यों कम बन रहे ऐसे गीत: सवाल यह है कि आज के समय में बीते दौर की तरह सुकूनदायक, रूहानी और ठहराव भरे गीत क्यों नहीं बनते? खोजने पर इसके कई कारण निकलकर सामने आते हैं। जैसे-आज के गीत 'सुनाई देने' के लिए बनाए जाते हैं, 'महसूस होने' के लिए नहीं। तेज बीट्स और ऊंचे सुर तुरंत ध्यान खींचते हैं, जबकि नीचे सुर धीरे और स्थायी असर करते हैं। आज की फास्ट लाइफ, मोबाइल स्पीकर, रील्स और जिम प्लेलिस्ट को ध्यान में रखकर बनाए जा रहे गीतों में वो सुकून, वो ठहराव महसूस करना मुश्किल है। आज के समय में म्यूजिक कंपनियां चाहती हैं पहले 10 सेकेंड में ही हिट और व्यूज मिल जाए। नीचे सुर वाला गीत धीरे खुलता है, इसलिए उसे आज के दौर में 'रिस्की' माना जाता है।

वॉल्यूम-बीट्स को महत्व: बीते दौर में गायक फिल्म के किरदार से पहले गीत के भाव खोजते थे। आज के अधिकतर गाने में एक्टर और उसकी स्क्रीन इमेज का पहले ध्यान रखा जाता है। इस प्रयास में कई बार गायकी पर वॉल्यूम और बीट्स भारी पड़ जाते हैं।

'ऐ दिल है मुश्किल' का गीत 'चन्ना मेरेया'

शास्त्रीय प्रशिक्षण की कमी: नीचे और मध्यम सुर में गाना आसान नहीं होता। इसके लिए रियाज, सांस पर नियंत्रण और धैर्य चाहिए होता है, जो आज के गायकों में कम होता जा रहा है।

कभी-कभार सुनाई पड़ते हैं मधुर गीत: अच्छे, मधुर गीत भले ही आज फिल्म संगीत के हाशिए पर चले गए हैं, लेकिन ये पूरी तरह खत्म नहीं हुए हैं। आज भी कुछ मधुर गीत बन रहे हैं, जो बिना शोर किए दिल में उतर जाते हैं। उदाहरण के तौर पर हम आज के दौर के कुछ बेहतरीन सीधे रूह में उतरने वाले गीतों को देख सकते हैं- फिल्म 'तमाशा' के गीत 'अगर तुम साथ हो..' (गायक-अरिजीत सिंह और अलका याग्निक, संगीत- ए. आर. रहमान) गीत आज के दौर में मधुर गीत की सबसे सशक्त वापसी है। अलका याग्निक की आवाज पुराने दौर की गंभीरता लौटाती है, जबकि अरिजीत का संयम गीत को समकालीन बनाता है। इसी तरह फिल्म 'ऐ दिल है मुश्किल' के गीत 'चन्ना मेरेया..' (गायक-अरिजीत सिंह, संगीत- प्रीतम) का मुखड़ा भले ही ऊंचाई छूता हो, लेकिन गीत का अंतरा और भावात्मक आधार नीचे सुर में ही बैठे हैं। यह गीत इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि कम ही सही लेकिन आज भी नीचे सुर के भावप्रवण गीत लोगों को खूब भाते तो हैं ही, फिल्म मेकर्स को व्यावसायिक सफलता भी दिलवा सकते हैं।

बाजार का है दबाव: आज का संगीत उद्योग जिनके हिसाब से चलता है, उनमें से बड़ी संख्या रील देखने वाले युवाओं की है। पहले 10 सेकेंड में रुकने या स्क्रॉल करने वाले श्रोता और दर्शक, जिनकी पसंद पर पैसा, प्रमोशन और ट्रेंड तय होता है- वे तेज, ऊंचे और तुरंत पकड़ में आने वाले सुर चाहते हैं। मध्यम और नीचे सुर का गीत धीरे खुलता है, दो-तीन बार सुनने पर असर करता है, अकेलापन और ठहराव की मांग करता है। आज के संगीत प्रेमियों और इंडस्ट्री को गायक से ज्यादा परफॉर्मर चाहिए। लाइव शो, डांस, स्क्रीन प्रेजेंस भी मायने रखता है। इन्हीं सब पहलुओं को ध्यान में रखकर आज के गीत-संगीत को रचा जाता है। देखा जाए, तो मामला सीधा-सीधा प्रोफेशनल प्रेशर के साथ ही 'डिमांड एंड सप्लाई' का माना जा सकता है। *